facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 08 सितंबर 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 07 ● मूल्यः 5 रुपए

सीपी राधाकृष्णन बने...

भगवान ब्रह्मा ने दैवव्यपाश्रय का ज्ञान महाब्रह्मर्षियों को दिया इसके बाद यह आगे दिया गया। लेकिन आज की स्थिति यह है कि किसी को इसके बारे में पूरा ज्ञान नहीं है। इसके बिना रोग नहीं हटेंगे चाहे कितना पाठ, हवन कर लो।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी

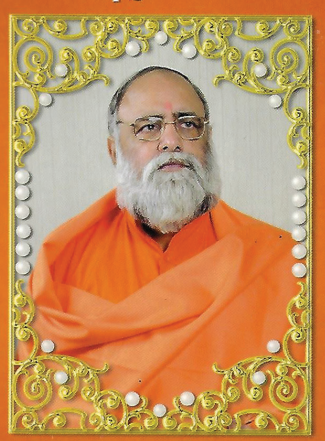

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

●

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

●

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

नेपाल में गुस्से का ज्वालामुखी

सोशल मीडिया बैन से शुरू हुआ तूफान, राजनीतिक अस्थिरता ने दी चिंगारी

@ भारतश्री ब्यूरो

नेपाल में हाल ही में जो घटनाएँ हुईं, उसने पूरे दक्षिण एशिया को चौंका दिया। सरकार ने अचानक सोशल मीडिया वेबसाइटों पर रोक लगा दी। यह फैसला जैसे ही सामने आया, वैसे ही देश के युवाओं का गुस्सा भड़क उठा।ख़ासकर जेन-ज़ेड (Gen-Z) – यानी वह पीढ़ी जो डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अपनी आवाज़ उठाना और दुनिया से जुड़ना जानती है – इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला मान रही थी। सोशल मीडिया उनके लिए सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि संचार और जुड़ाव का जरिया भी है।यही कारण था कि कुछ ही घंटों में गुस्से की आग सड़कों पर उतर आई। प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन में आग लगा दी, जिसकी लागत करीब 43.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर थी। सरकार को करोड़ों का नुकसान होने का अंदेशा है। कई विदेशी प्रोजेक्ट भी प्रभावित हो सकते हैं।

तकनीकी बहाने के पीछे छिपा असली असंतोष

सोशल मीडिया बैन सिर्फ एक बहाना था। असली वजह थी भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी और दशकों से चल रही राजनीतिक अस्थिरता।लोग लंबे समय से चुपचाप सब सह रहे थे, लेकिन जब सरकार ने उनकी आवाज़ दबाने की कोशिश की, तो असंतोष ज्वालामुखी बनकर फट पड़ा। स्थिति तब और बिगड़ी जब सुरक्षा बलों ने आंदोलनकारियों पर सख़्ती दिखाई। गोलीबारी और हिंसा में कम से कम 22 लोग मारे गए। हालात बेकाबू होते देख प्रधानमंत्री केपी ओली को इस्तीफ़ा देना पड़ा।

नेपाल की राजनीति, स्थिरता हमेशा नदारद

नेपाल का राजनीतिक इतिहास हमेशा उथल-पुथल से भरा रहा है।1951 में जब देश ने राजतंत्र से लोकतंत्र की ओर कदम बढ़ाया, उम्मीदें बहुत थीं। लेकिन जल्द ही राजतंत्र ने फिर से सत्ता पर पकड़ मजबूत कर ली।1990 के दशक में माओवादी विद्रोह ने पूरे राजनीतिक ढांचे को हिला दिया। 2006 में राजतंत्र खत्म हुआ और 2008 में माओवादी सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरे। पर वे भी स्थिर शासन देने में नाकाम रहे।2008 के बाद से नेपाल की राजनीति में किसी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। मौजूदा संसद में भी ओली की पार्टी के पास 285 में से केवल 78 सीटें थीं। यह बिखराव ही भ्रष्टाचार और अस्थिरता को बढ़ावा देता रहा।

गरीबी कम हुई, लेकिन प्रवासियों के भरोसे

अगर नेपाल के विकास की बात करें तो एक दिलचस्प तस्वीर सामने आती है।1995 में जहाँ 55% आबादी अंतरराष्ट्रीय गरीबी रेखा (2.15 डॉलर प्रतिदिन) से नीचे थी, वहीं 2023 में यह घटकर सिर्फ 0.4% रह गई। सवाल उठता है कि क्या नेपाल ने चमत्कारी विकास कर लिया? असलियत है यह सफलता घरेलू विकास से नहीं, बल्कि विदेशों में काम करने वाले नेपाली श्रमिकों की कमाई से आई। आज नेपाल की जीडीपी का लगभग 30% हिस्सा विदेश से आने वाले पैसे पर निर्भर है। हर चौथे घर से कोई न कोई सदस्य विदेश में काम करता है। इसलिए सोशल मीडिया प्रतिबंध ने गुस्से को और भड़काया। क्योंकि यह सिर्फ आवाज़ दबाने का हथकंडा नहीं था, बल्कि विदेशों में बसे परिवारजनों से संपर्क का सस्ता साधन भी छीन लिया गया।

सिर्फ पढ़ाई और नौकरी तक सीमित नहीं रहना चाहते जेन-ज़ेड

नेपाल के युवा अब सिर्फ पढ़ाई और नौकरी तक सीमित नहीं रहना चाहते। वे इंटरनेट के ज़रिये दुनिया से जुड़े हुए हैं। उन्हें पता है कि दुनिया में लोकतंत्र का मतलब क्या है। वे समझते हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कितनी जरूरी है। वे देख रहे हैं कि भ्रष्टाचार और बेरोज़गारी उनके भविष्य को खत्म कर रही है। यही वजह है कि उनका विरोध इतना प्रबल रहा। Gen-Z की यह आवाज़ नेपाल में नई राजनीतिक और सामाजिक दिशा तय कर सकती है।

दक्षिण एशिया के लिए चेतावनी

नेपाल की हालिया घटनाएँ सिर्फ उस देश के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के लिए चेतावनी हैं।जनता की आवाज़ को दबाना असंभव है।तकनीकी फैसलों के पीछे छुपी राजनीतिक मंशा जनता तुरंत पहचान लेती है। आर्थिक विकास अगर प्रवासियों पर टिका रहेगा, तो देश कभी स्थिर नहीं हो पाएगा।नेपाल के नेताओं को समझना होगा कि युवा पीढ़ी अब पुराने तरीके की राजनीति नहीं झेलेगी। उन्हें पारदर्शिता, रोजगार और स्थिरता चाहिए। नेपाल में सोशल मीडिया बैन ने सिर्फ तकनीकी बहस नहीं छेड़ी, बल्कि दशकों से जमा असंतोष को सतह पर ला दिया। संसद भवन का जलना, प्रधानमंत्री का इस्तीफ़ा और 22 लोगों की मौत यह सब उसी असंतोष का नतीजा है।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सीपी राधाकृष्णन बने देश के 15वें उपराष्ट्रपति

विपक्षी खेमे में दरार के संकेत

@ रिंकू विश्वकर्मा

एनडीए उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन ने उपराष्ट्रपति चुनाव में बड़ी जीत दर्ज की है। संसद परिसर में सोमवार को हुए मतदान में उन्हें 452 प्रथम वरीयता वोट मिले, जबकि विपक्षी INDIA गठबंधन के उम्मीदवार, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज बी. सुदर्शन रेड्डी को 300 वोट ही मिले। इस तरह राधाकृष्णन ने 152 वोटों के अंतर से जीत हासिल की और वे देश के 15वें उपराष्ट्रपति बन गए।

NDA का जश्न, INDIA गठबंधन में सन्नाटा

राधाकृष्णन की जीत के बाद एनडीए खेमे में उत्साह का माहौल है। भाजपा नेताओं ने इसे "विकास और स्थिरता पर विश्वास की जीत" बताया। वहीं, विपक्षी INDIA गठबंधन में निराशा छाई रही। खासकर इसलिए क्योंकि कांग्रेस ने पहले दावा किया था कि उनके पास 315 सांसदों का पक्का समर्थन है।लेकिन मतदान का नतीजा कुछ और ही कह रहा है। सुदर्शन रेड्डी को केवल 300 वोट मिले। यानी 15 वोट कहां गए, यह सवाल विपक्षी खेमे को बेचैन कर रहा है।

विपक्ष में फूट की चर्चा

सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या विपक्षी सांसदों ने क्रॉस-वोटिंग की? वरिष्ठ कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने मतदान से पहले सोशल मीडिया पर दावा किया था कि सभी 315 विपक्षी सांसदों ने 100% मतदान किया। यदि यह सच है, तो फिर 15 वोट कम क्यों पड़े?राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि विपक्षी एकता सिर्फ मंच पर दिख रही थी, मतदान में नहीं। इस क्रॉस-वोटिंग ने INDIA ब्लॉक की अंदरूनी कमजोरी को उजागर कर दिया है।

किसने नहीं किया मतदान?

इस चुनाव में बीआरएस और बीजेडी ने हिस्सा ही नहीं लिया। राज्यसभा में बीआरएस के 4 और बीजेडी के 7 सांसद हैं। यानी 11 सांसद अनुपस्थित रहे। इसके अलावा शिरोमणि अकाली दल (SAD) के इकलौते सांसद ने भी मतदान नहीं किया। उन्होंने पंजाब में आई बाढ़ का हवाला देते हुए वोट डालने से इनकार कर दिया।इस तरह विपक्ष को मिलने वाले संभावित वोटों में पहले से ही कमी आ गई थी। लेकिन इसके बावजूद जो वोट पड़े, उनमें भी टूट दिखना विपक्ष के लिए सबसे बड़ा झटका है।

उपराष्ट्रपति पद क्यों खाली हुआ?

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई को स्वास्थ्य कारणों का हवाला देकर अचानक इस्तीफा दे दिया था। उनका कार्यकाल अगस्त 2027 तक बचा हुआ था। ऐसे में चुनाव कराना जरूरी हो गया।धनखड़ के इस्तीफे के बाद यह भी चर्चा थी कि क्या बीजेपी किसी बड़े चेहरे को लाएगी या किसी सहयोगी दल को मौका देगी। अंततः भाजपा ने तमिलनाडु के दिग्गज नेता और पूर्व सांसद सीपी राधाकृष्णन पर दांव लगाया।

कौन हैं सीपी राधाकृष्णन?

68 वर्षीय सीपी राधाकृष्णन तमिलनाडु की राजनीति में जाना-पहचाना नाम हैं। वे दो बार लोकसभा सांसद रह चुके हैं। हाल ही में झारखंड के राज्यपाल के रूप में उनकी सख्त और सादगीपूर्ण छवि चर्चा में रही। भाजपा ने उन्हें उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाकर दक्षिण भारत में अपनी पकड़ मजबूत करने का संदेश दिया है।

सुदर्शन रेड्डी क्यों?

विपक्ष ने सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज बी. सुदर्शन रेड्डी को उम्मीदवार बनाया था। उनके चयन के पीछे मकसद यह था कि विपक्ष राजनीति से इतर एक साफ-सुथरी और विद्वान छवि को सामने लाए। रेड्डी आंध्र प्रदेश से आते हैं और मानवाधिकार मामलों में उनकी गहरी समझ मानी जाती है।लेकिन परिणाम से साफ है कि विपक्षी एकता पर भरोसा करना ही उनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई।

संसद में माहौल

सोमवार को संसद परिसर पूरी तरह चुनावी रंग में रंगा हुआ था। मतदान से पहले एनडीए ने अपने सांसदों के लिए कार्यशाला आयोजित की, जिसमें उन्हें मतदान की प्रक्रिया और सावधानियां समझाई गईं। भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह खुद सांसदों को उत्साहित करते नजर आए।दूसरी ओर विपक्ष के नेताओं ने भी दावा किया कि उनका खेमे में पूरा अनुशासन है और सभी सांसद एकजुट होकर मतदान करेंगे। लेकिन शाम को नतीजे आते ही तस्वीर बिल्कुल अलग निकली।

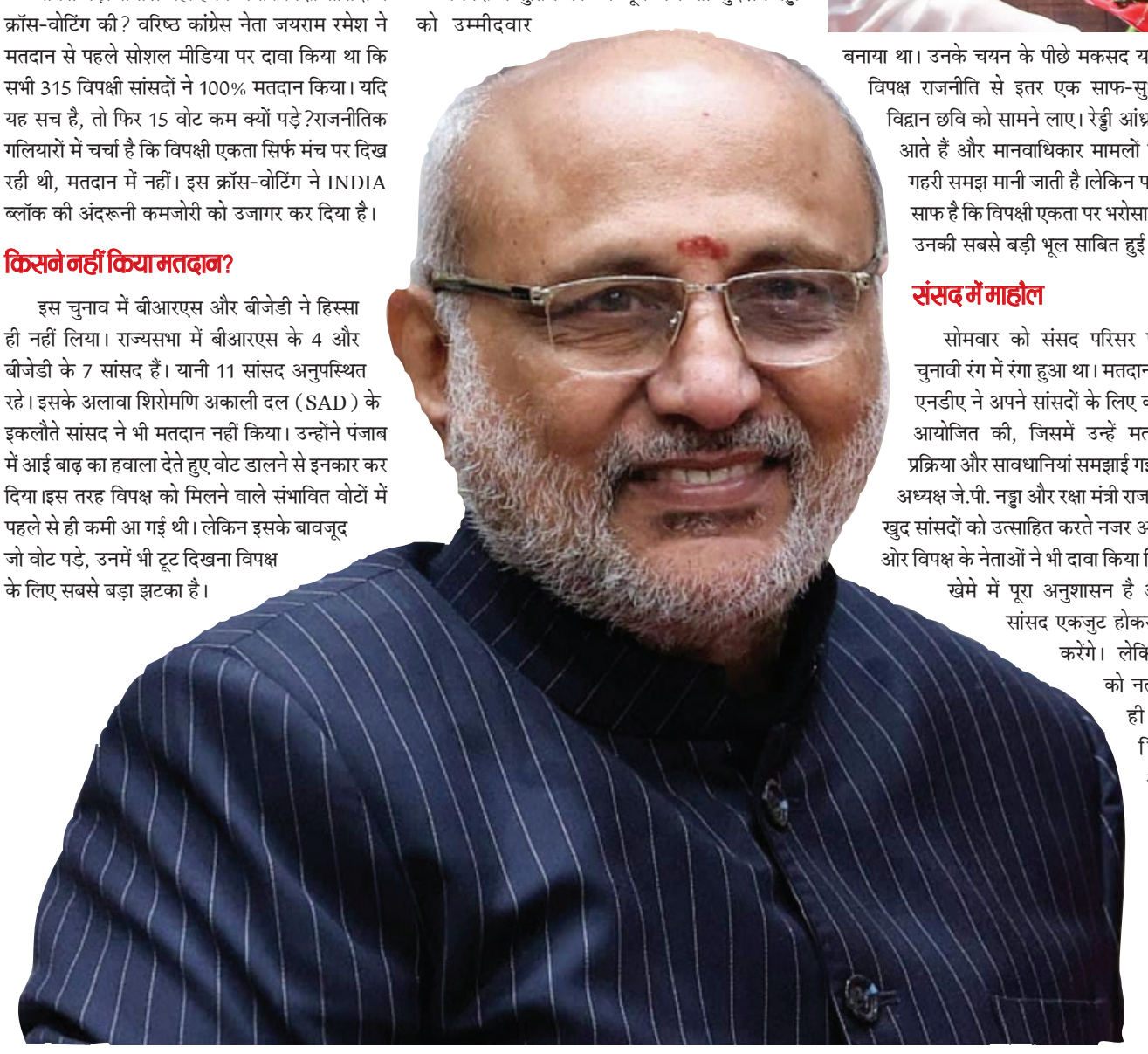

विपक्ष पर उठ रहे हैं सवाल

INDIA गठबंधन में पहले से ही सीट बंटवारे और नेतृत्व को लेकर मनमुटाव की खबरें आती रही हैं। उपराष्ट्रपति चुनाव के नतीजे ने इन आशंकाओं को और गहरा दिया है।अब सवाल यह है कि विपक्ष में कौन-सा दल या नेता NDA की तरफ झुका? क्या यह महज 15 वोटों की गड़बड़ी है या बड़ी राजनीतिक रणनीति का हिस्सा?कांग्रेस और उसके सहयोगी दल इस पर कुछ भी साफ कहने से बच रहे हैं। लेकिन राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि यह नतीजा 2024 लोकसभा चुनाव से पहले विपक्ष की छवि को कमजोर कर सकता है।

इस जीत के साथ एनडीए ने संसद में अपनी एकजुटता और मजबूती का प्रदर्शन किया है। भाजपा नेताओं का कहना है कि यह सिर्फ राधाकृष्णन की नहीं, बल्कि "विकास की राजनीति" की जीत है।भाजपा अब इस जीत को दक्षिण भारत में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए भुनाएगी। वहीं, विपक्ष की हार उसके कार्यकर्ताओं और समर्थकों में निराशा फैला सकती है।

आगे की राजनीति पर असर

उपराष्ट्रपति चुनाव का परिणाम सीधे तौर पर सरकार की स्थिरता को प्रभावित नहीं करता, लेकिन यह संदेश जरूर देता है कि संसद में कौन कितना मजबूत है।

एनडीए की यह जीत यह साबित करती है कि विपक्ष अभी भी बिखरा हुआ है और उसकी एकजुटता महज कागजों तक सीमित है।वहीं, विपक्ष के लिए यह हार एक चेतावनी है कि यदि उसने अंदरूनी मतभेद दूर नहीं किए तो 2024 के आम चुनाव में भी उसका यही हाल हो सकता है।सीपी राधाकृष्णन की जीत से जहां एनडीए का मनोबल ऊंचा हुआ है, वहीं विपक्षी INDIA गठबंधन के भीतर दरारें और गहरी हो गई हैं। 15 वोटों की गुमशुदगी विपक्ष की राजनीति के लिए सबसे बड़ा सवाल बन गई है।

NDA और महागठबंधन में सीटों की खींचतान तेज

किसे कितनी सीटें मिलेगी?

@ आनंद मीणा

बिहार विधानसभा चुनाव का बिगुल बजने से पहले ही राजनीतिक तापमान चरम पर है। एनडीए और महागठबंधन, दोनों ही खेमों में सीटों को लेकर रस्साकशी जारी है। नेताओं की रैलियां, यात्राएं और जनसंपर्क अभियान पूरे जोरों पर हैं, लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही बना हुआ है कि आखिर किसे कितनी सीटें मिलेगी?

नीतीश ने बढ़ाई बीजेपी की टेंशन

बीते दिनों मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राजपुर सीट से उम्मीदवार की घोषणा कर सबको चौंका दिया। बीजेपी इस कदम से असहज दिखी। 2020 में भी सीट बंटवारे पर काफी मोलभाव हुआ था। तब जेडीयू ने 115 और बीजेपी ने 110 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। मांझी की पार्टी हम (HAMS) को सात सीटें और मुकेश सहनी की वीआईपी को 11 सीटें मिली थीं।

2020 में क्या हुआ था?

उस चुनाव में जेडीयू का प्रदर्शन उम्मीद से काफी कमजोर रहा और वह सिर्फ 43 सीटों पर सिमट गई। बीजेपी को 74 सीटों की बड़ी सफलता मिली। दिलचस्प यह रहा कि लोक जनशक्ति पार्टी (LJP) अलग होकर चुनाव लड़ी और उसने जेडीयू के खिलाफ उम्मीदवार खड़े किए। नतीजा यह हुआ कि नीतीश कुमार की पार्टी तीसरे नंबर पर खिसक गई।

पासवान फैक्टर एक बार फिर

अब 2025 के चुनाव में एनडीए के भीतर लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) यानी चिराग पासवान की पार्टी सबसे ज्यादा सीटों की मांग कर रही है। पार्टी का कहना है कि वह अकेले चुनाव लड़कर भी 6% वोट ला चुकी है और अगर सभी 243 सीटों पर उतरी होती तो यह आंकड़ा 10% से ऊपर पहुंच सकता था। यही कारण है कि चिराग पासवान की टीम 35 से 40 सीटों की मांग कर रही है।जमुई से सांसद अरुण भारती ने भी हाल में कहा, "हमारे कार्यकर्ताओं की ताकत और जनता का भरोसा किसी से कम नहीं है। इस बार हमारी हिस्सेदारी बढ़नी ही चाहिए।"

एनडीए की गणित

सूत्रों के मुताबिक, एनडीए में सीट बंटवारे का जो फॉर्मूला उभर रहा है, उसमें जेडीयू को 102, बीजेपी को 101, चिराग की एलजेपी (आर) को 20, हम को 10 और उपेंद्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम) को भी 10 सीटें मिल सकती हैं। यानी तस्वीर साफ है कि जेडीयू एक बार फिर "बड़े भाई" की भूमिका में रहेगी।जीतन राम मांझी ने सीट बंटवारे को लेकर बयान दिया कि "जो भी फैसला केंद्रीय नेतृत्व करेगा, वही अंतिम होगा।" यह साफ संकेत है कि एनडीए में भले दांव-पेंच जारी हों, लेकिन आख़िरी फैसला दिल्ली से ही होगा।

2020 में भी सीट बंटवारे पर काफी मोलभाव हुआ था। तब जेडीयू ने 115 और बीजेपी ने 110 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। मांझी की पार्टी हम (HAMS) को सात सीटें और मुकेश सहनी की वीआईपी को 11 सीटें मिली थीं।

महागठबंधन में भी मची है हलचल

उधर, महागठबंधन यानी इंडिया गठबंधन में भी सीटों को लेकर माथापच्ची जारी है। दिल्ली में हुई अहम बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, अजय माकन, कन्हैया कुमार और पप्पू यादव समेत कई बड़े नेता शामिल हुए।बैठक के बाद बिहार प्रभारी कृष्णा अल्लावरू ने कहा कि राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा का रिव्यू किया गया और बाकी दलों के साथ सीट शेयरिंग पर चर्चा जारी है।

कांग्रेस पर दबाव

2020 में कांग्रेस 70 सीटों पर लड़ी थी, लेकिन अब आरजेडी उसे 50-55 सीटें ही देने के मूड में है। माना जा रहा है कि इस बार कांग्रेस को करीब 60 सीटों पर ही समझौता करना होगा।

आरजेडी खुद 140 सीटों पर मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है। सूत्रों के मुताबिक, महागठबंधन का संभावित फार्मूला यह हो सकता है – आरजेडी 122-124, कांग्रेस 58-62, लेफ्ट पार्टियां 31-33, वीआईपी 20-22 और जेएमएम 2-3 सीटों पर चुनाव लड़ सकती हैं।

मुकेश सहनी का बड़ा दांव

दिलचस्प है कि वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी ने 50 सीटों की मांग कर दी है। वे हाल ही में राहुल गांधी की यात्रा में लगातार साथ दिखे और विपक्षी एकजुटता का संदेश देने की कोशिश की। सहनी का तर्क है कि मछुआरा समुदाय की बड़ी आबादी उनके साथ है, इसलिए उनकी पार्टी को ज्यादा सीटें मिलनी चाहिए।

2020 के चुनाव में आरजेडी 75 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनी थी। कांग्रेस 70 सीटों पर लड़कर केवल 19 सीटें जीत पाई थी। वहीं लेफ्ट पार्टियों ने शानदार प्रदर्शन किया था। खासकर भाकपा (माले) ने 19 में से 12 सीटें जीतकर सहयोगियों में सबसे बेहतर स्ट्राइक रेट दिखाया था।

एनडीए बनाम महागठबंधन

अगर 2020 के नतीजों को देखें तो एनडीए ने 125 सीटों पर जीत हासिल की थी, जबकि महागठबंधन को 110 सीटें मिली थीं। इस बार समीकरण कुछ अलग हैं। एलजेपी (आर) अब एनडीए के साथ है, जबकि पशुपति पारस महागठबंधन की ओर झुकते दिख रहे हैं।दोनों खेमे मतदाताओं को साधने के लिए रैलियां और यात्राएं कर रहे हैं। राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा को महागठबंधन अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मान रहा है। उधर, बीजेपी और जेडीयू लगातार सुशासन और "विकास" का नारा दोहरा रहे हैं।

नीतीश कुमार का चेहरा अब भी एनडीए की ओर से मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार माना जा रहा है, हालांकि बीजेपी के भीतर कुछ असहमति की आवाजें उठ रही हैं।

कब तक होगा फैसला?

सूत्रों का कहना है कि एनडीए में सीट बंटवारे पर जल्द ही अंतिम मुहर लग सकती है। चिराग पासवान ने भी मंगलवार को कहा कि "बिहार में सीट बंटवारे का फार्मूला जल्द ही सामने आ जाएगा।" वहीं महागठबंधन की ओर से भी संकेत मिले हैं कि 15 से 20 सितंबर के बीच सीटों का बंटवारा फाइनल कर लिया जाएगा।

कुल मिलाकर, बिहार का चुनावी दंगल इस बार भी दिलचस्प होने वाला है। एक तरफ एनडीए में जेडीयू और बीजेपी की पुरानी साझेदारी है, तो दूसरी तरफ महागठबंधन की एकजुटता। लेकिन दोनों ही खेमों में सीटों की खींचतान इतनी गहरी है कि यह चुनाव से पहले ही बड़ा सस्पेंस बना हुआ है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

प्राथमिक विद्यालयों का समायोजन मानवाधिकार का हनन

@ पार्थ सारथी

उत्तर प्रदेश सरकार ने हाल ही में विद्यालयों के मर्जर और बंदी का आदेश जारी किया है। आदेश के मुताबिक उन प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों को निकटवर्ती विद्यालयों में समायोजित किया जाएगा, जहाँ नामांकन बेहद कम है। सरकार का तर्क है कि इससे शिक्षा की गुणवत्ता सुधरेगी और संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल होगा। लेकिन इस फैसले ने गाँव-गाँव में चिंता की लकीरें खींच दी हैं।

सरकार एक ओर जहां यह कह रही है कि इस कदम से बच्चों को बेहतर शिक्षा और माहौल मिलेगा, वहीं दूसरी ओर हकीकत में इसका मानवीय पक्ष बहुत पीड़ादायक है। प्रयागराज के नगर क्षेत्र स्थित जवाहरगंज ढरहरिया के पासी टोले का ही उदाहरण लें। इस मोहल्ले में वर्षों से एक प्राथमिक विद्यालय संचालित था। मोहल्ले के अधिकांश बच्चे यहीं पढ़ा करते थे। लेकिन अब विद्यालय बंद होने के कारण बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे हैं।

छात्राएं पढ़ाई छोड़ने पर मजबूर

धरहरीया की रहने वाली 13 साल की खुशी पिछले 2 वर्ष से विद्यालय नहीं जा पाई है। उसके माता-पिता का पहले ही निधन हो चुका है। उसका पालन-पोषण उसका बड़ा भाई धर्मेंद्र करता है। खुशी इसी विद्यालय की छात्रा थी लेकिन विद्यालय बंद हो जाने के बाद से वह पिछले दो साल से पढ़ाई से दूर है। खुशी भी पढ़ना चाहती है। उसके भी कुछ सपने हैं जिसे वह पढ़ लिख कर जीना चाहती है। खुशी का कहना है कि जब वह अपनी सहेलियों को किताब-कॉपी लेकर स्कूल जाते देखती है तो उसका मन भी व्याकुल हो उठता है। उसे भी पढ़ना है, बड़ा आदमी बनना है, लेकिन उसका भाई मजदूरी कर किसी तरह घर का खर्च चला रहा है। गरीबी और स्कूल की दूरी ने उसके सपनों पर ताला लगा दिया है।

खुशी का भाई धर्मेंद्र जिसकी उम्र 26 वर्ष है बताता है कि बहन पढ़ने में बहुत होशियार है। लेकिन नजदीकी स्कूल गांव से लगभग दो किलोमीटर दूर है। उसे बहन को अकेले भेजना उचित नहीं लगता क्योंकि रास्ता सुरक्षित नहीं है अभी हाल ही में एक दो घटनाएं ऐसी घटित भी हो चुकी है जिसके वजह से डर और बढ़ गया है । ऊपर से नजदीकी विद्यालय अर्धसरकारी है, जिसमें फीस भरनी पड़ती है। उसकी आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि वह फीस वहन नहीं कर सकता। इसके अलावा बाढ़ में उनके घर के सारे जरूरी कागजात भी बह गए। धर्मेंद्र का कहना है कि अगर स्कूल यहीं मोहल्ले में चलता रहता तो उसकी बहन खुशी भी बाकी बच्चों की तरह पढ़ लिख पाती।

रोज करीब 7 किमी. साइकिल चलाने को मजबूर छात्र

इसी विद्यालय में पढ़ने वाले एक और छात्र अनुराग की कहानी भी कम पीड़ादायक नहीं है। वह अब कक्षा तीन में पढ़ता है और रोज ढरहरिया से बैंक रोड स्थित विद्यालय तक साइकिल चला कर जाता है। रोजाना आने-जाने से वह थक जाता है। उसकी मां बताती हैं कि जब तक बच्चा घर नहीं लौटता, उनके दिल में डर बना रहता है कि बच्चा रास्ते में कहीं सुरक्षित है या नहीं। अनुराग के माता-पिता खेतिहर मजदूर हैं। उनकी मां का कहना है कि पहले प्राथमिक विद्यालय पास में था तो किसी तरह शिक्षा हो जाती थी, लेकिन अब हर छह महीने पर फीस भरनी पड़ती है। एक बच्चे की फीस ही हजार रुपए है, ऐसे में उनका खर्च और बढ़ गया है।

गांव की एक महिला, जिन्होंने अपना नाम जाहिर नहीं करने की शर्त रखी, बताती हैं कि इस स्कूल की छत करीब दो साल पहले गिर गई थी। बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए तब से वहां पढ़ाई बंद कर दी गई। मोहल्ला नदी के किनारे बसा है, बरसात के दिनों में यहां महीनों तक पानी भरा रहता है। इस वजह से स्कूल की इमारत और जर्जर हो गई। सरकारी कर्मचारी कई बार सर्वे के नाम पर आए लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

प्रयागराज के सहसों चौराहा के पास का हाल भी कुछ अलग नहीं है। यहाँ के छात्र आदित्य बताते हैं कि उन्हें यह समझ में नहीं आता कि उनका स्कूल क्यों बंद कर दिया गया। लेकिन अब दोस्तों से मुलाकात नहीं हो पाती। उनके माता-पिता गरीब हैं, इसलिए प्राइवेट स्कूल में दाखिला कराना संभव नहीं है। आदित्य कहता है कि उसे स्कूल का मिड डे मील बहुत अच्छा लगता था, लेकिन अब जब मां मजदूरी करने के बाद समय पर घर नहीं लौट पाती तो उसे भूखा रहना पड़ता है।

ग्रामीणों में भी असहमति

गांव के लोग कहते हैं कि सरकार का कहना है बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए स्कूलों का मर्जर किया जा रहा है। लेकिन सवाल यह है कि अगर बच्चे ही स्कूल नहीं पहुंच पाएंगे तो शिक्षा की गुणवत्ता कैसे बढ़ेगी। सबसे ज्यादा असर लड़कियों पर पड़ा है। उनकी पढ़ाई अब पूरी तरह से घर की आर्थिक स्थिति और सुरक्षा के सवालों पर टिकी है।

अनुराग जैसे छोटे बच्चे थकान और डर के बीच अपनी पढ़ाई पूरी करने की कोशिश कर रहे हैं। आदित्य जैसे मासूम कभी-कभी भूखे पेट सोने को मजबूर हैं। सरकारी आंकड़े कुछ और कहते हैं लेकिन हकीकत यही है कि प्राथमिक विद्यालयों के बंद होने से ग्रामीण परिवारों की पीड़ा बढ़ गई है और बच्चों का भविष्य अधर में लटक गया है।

समायोजन पर शिक्षक संघ

इस बारे में जब शिक्षक संघ से बात की गई तो सुल्तानपुर के प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष दिलीप पांडेय कहते हैं कि यह अधिकार पूरी तरह से संवैधानिक अधिकारों का हनन है। इससे प्राथमिक विद्यालयों के बनाए जाने के मूल में सर्व शिक्षा की जो बात थी ये उसी पर खतरा है जिसमें साफ लिखा था कि एक किमी के दायरे में एक प्राथमिक विद्यालय होंगे। संघ का कहना है कि विद्यालयों की संख्या कम होगी तो भविष्य में शिक्षकों की भर्तियाँ भी घटेंगी। फिलहाल तो शिक्षकों को दूसरे विद्यालयों में समायोजित किया जा रहा है, लेकिन आदेश में साफ है कि आगे चलकर छात्र-शिक्षक अनुपात के आधार पर शिक्षकों की संख्या घटा दी जाएगी। इससे नई भर्तियों पर रोक लग सकती है।

संघ के पदाधिकारियों का कहना है कि अभी बच्चों को नज़दीकी विद्यालयों में समायोजित किया जाएगा, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि शिक्षकों को कहाँ और कैसे रखा जाएगा। उनका समायोजन पूरी तरह बीएसए के विवेक पर निर्भर करेगा। शिक्षक संगठनों का मानना है कि यह निर्णय शिक्षा और रोजगार दोनों के लिए घातक साबित होगा।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता भी आक्रोशित

आंगनवाड़ी कर्मचारी यूनियन,उत्तर प्रदेश की प्रदेश अध्यक्ष वीणा गुप्ता का कहना है कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता भी इस फैसले से प्रभावित हो रहे हैं। कई आंगनबाड़ी केंद्र प्राथमिक विद्यालयों से जुड़े होते हैं। यदि विद्यालय बंद होते हैं या दूसरे गाँव में शिफ्ट किए जाते हैं तो आंगनबाड़ी केंद्रों पर भी असर पड़ेगा। इससे बच्चों के पोषण और प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था बाधित हो सकती है।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 08 सितंबर 2025, विक्रम संवत 2080

राजनीति की असली दुकानदारी

हमारा भारत देश अमेरिका से दबाव महसूस कर रहा है ऐसी स्थिति में नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत मिलकर जो दिशा ले रहे हैं वह बहुत ही अच्छी दिशा है । मुझे तो यहां तक पता चला की ट्रंप ने नरेंद्र मोदी को फोन लगाया था लेकिन मोदी जी ने साफ कहा की फोन पर चर्चा नहीं होगी इसका मतलब कि भारत बहुत सोच समझकर एकदम सही दिशा में आगे बढ़ रहा है एक तरफ भारत दुनिया की राजनीति में अपने स्थिति बनाने की कोशिश कर रहा है दूसरी ओर हमारे ही कुछ लोग गांधी और सावरकर के बीच में झगड़ा कराकर अपनी दुकानदारी मजबूत करना चाहते हैं। अब गांधी है ना सावरकर है ।मुझे बहुत आश्चर्य होता है और आज तक मुझे उत्तर नहीं मिला कि यदि कोई संघ का आदमी गांधी की प्रशंसा कर दे तो सारे गांधीवादी उसे व्यक्ति के विरोध में खड़े हो जाएंगे और मुझे यह भी आश्चर्य है कि उसे आदमी को सावरकर वादी भी खुला विरोध करेंगे ।मुझे यह बात समझ में नहीं आती की गांधी की प्रशंसा से गांधीवादियों और सावरकर वीडियो इन दोनों में कौन सी एक जुटता है आखिर दोनों ही क्यों विरोध करते हैं सारे गांधीवादी मोदी भागवत का खुला विरोध करते हैं और सारे सावरकर वादी भी मोदी भागवत का हमेशा विरोध करते हैं। यह दोनों अपने को दिखाई तो हैं कि हम एक दूसरे के खिलाफ हैं लेकिन सच बात यह है की दोनों को ही अपनी दुकानदारी पर खतरा दिखता है क्योंकि यदि गांधी और सावरकर के बीच झगड़ा खत्म हो जाए तो फिर गांधीवादियों और सावरकर वीडियो की दुकान कैसे चलेगी फिर भी मेरा आप लोगों को सुझाव है कि अब गांधी औरसावरकर से बहुत आगे बढ़ाने की जरूरत है।

बजरंग मुनि

सत्ता के आईने में संपत्ति की तस्वीर

@ **अनुराग पाठक**

लोकतंत्र में पारदर्शिता का सिद्धांत केवल भाषणों और नारों तक सीमित नहीं होना चाहिए। सत्ता के शिखर पर बैठे लोगों की जीवनशैली, उनकी संपत्ति और उनकी घोषित आमदनी, जनता के सामने एक आईना पेश करती है। वित्त वर्ष 2024-25 के लिए केंद्रीय मंत्रियों की ओर से अपनी संपत्तियों का ब्योरा प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) की वेबसाइट पर सार्वजनिक किया गया है। इसमें पारंपरिक आभूषणों से लेकर आधुनिक क्रिप्टोकरेंसी, म्यूचुअल फंड से लेकर हथियारों तक का उल्लेख है। यह न केवल रोचक है बल्कि सत्ता और समाज के बदलते समीकरणों को भी उजागर करता है।

परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का ब्योरा एक दिलचस्प झलक देता है। उन्होंने 31 साल पुरानी एम्बेसडर कार समेत तीन गाड़ियां घोषित की हैं। यह एम्बेसडर कार केवल एक वाहन नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति के इतिहास और परंपरा का प्रतीक भी है। इसके साथ ही गडकरी और उनकी पत्नी ने 65 लाख से ज्यादा की सोने की ज्वेलरी घोषित की है। सवाल यह उठता है कि जब एक ओर देश में इलेक्ट्रिक वाहनों और हरित ऊर्जा की बातें हो रही हैं, तो मंत्रियों की विरासत और भावनात्मक जुड़ाव अब भी पुराने प्रतीकों से क्यों जुड़ा है?

इस सूची में सबसे अलग दिखते हैं कौशल विकास राज्य मंत्री और राष्ट्रीय लोक दल के अध्यक्ष जयंत चौधरी। उन्होंने न केवल 21.31 लाख रुपए की क्रिप्टोकरेंसी में निवेश घोषित किया है बल्कि उनकी पत्नी के पास भी 22.41 लाख रुपए की डिजिटल एसेट्स हैं। दिलचस्प यह है कि वे ऐसे इकलौते मंत्री हैं जिन्होंने क्रिप्टोकरेंसी को संपत्ति के रूप में स्वीकार किया है। भारत में अभी क्रिप्टोकरेंसी को लेकर स्पष्ट नियम नहीं बने हैं और रिजर्व बैंक समय-समय पर इसके खतरों की चेतावनी देता रहा है। ऐसे में एक केंद्रीय मंत्री का खुलकर इसे निवेश मानना यह संकेत देता है कि तकनीकी और आर्थिक बदलाव चाहे धीमे हों, राजनीति के कुछ चेहरे नए जोखिम उठाने को तैयार हैं।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 27 लाख की ज्वेलरी और 19 लाख के म्यूचुअल फंड घोषित किए हैं। यह आंकड़े पारंपरिक और आधुनिक निवेश के बीच एक संतुलन का उदाहरण देते हैं। सीतारमण की स्थिति यह दर्शाती है कि वित्तीय नियोजन केवल भाषणों में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी झलकना चाहिए।

राव इंदरजीत सिंह ने 1.2 करोड़ से ज्यादा की 1,679 ग्राम सोने की ज्वेलरी और 10 किलो चांदी-हीरे की ज्वेलरी घोषित की है। यह पारंपरिक निवेश भारतीय समाज की उस मानसिकता को

दर्शाता है, जहां सोना और चांदी केवल आभूषण नहीं, बल्कि सुरक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री वीरेंद्र कुमार ने 37 साल पुराना स्कूटर और एक रिवॉल्वर अपनी संपत्ति में बताया है। एक तरफ करोड़ों की ज्वेलरी और करोड़ों की गाड़ियां हैं, दूसरी तरफ एक पुराना स्कूटर। यह तस्वीर दर्शाती है कि राजनीति में जीवनशैली का दायरा कितना विस्तृत और विविध हो सकता है। रेल और फूड प्रोसेसिंग राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने 1997 मॉडल की मारुति कार घोषित की है।

महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने रिवॉल्वर, राइफल, ट्रैक्टर और करीब 1 करोड़ रुपए के म्यूचुअल फंड बताए हैं। महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर ने डबल बैरल गन, रिवॉल्वर और 67 लाख रु. से ज्यादा की सोने की ज्वेलरी घोषित की है। यह प्रवृत्ति बताती है कि सुरक्षा और शक्ति का प्रतीक अब केवल राजनीतिक ताकत में नहीं, बल्कि निजी संग्रह में भी झलकता है।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 8.98 करोड़ की संपत्ति घोषित की है, जिसमें एक रिवॉल्वर और एक पुरानी एंबेसडर कार शामिल है। वहीं, केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के पास 374 करोड़ की संपत्ति है, जिसमें एक पुरानी बीएमडब्ल्यू भी है। सिंधिया का यह आंकड़ा न केवल व्यक्तिगत समृद्धि का उदाहरण है, बल्कि राजनीति और वंशानुगत संपत्ति के गहरे रिश्ते का भी प्रतीक है।

इन सभी घोषणाओं से एक व्यापक तस्वीर उभरती है। राजनीति केवल नीतियों और भाषणों का खेल नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन की झलक भी है। गाड़ियां, हथियार, सोना-चांदी, म्यूचुअल फंड और क्रिप्टोकरेंसी ,इन सबमें एक साझा संदेश छिपा है कि सत्ता के शिखर पर बैठे लोग भी निवेश, विरासत और सुरक्षा की चिंताओं से अछूते नहीं हैं। सवाल यह है कि जब जनता महंगाई, बेरोजगारी और आर्थिक असुरक्षा से जूझ रही है, तब नेताओं की घोषित संपत्ति में दिख रही भव्यता और विविधता किस तरह से लोकतंत्र की नैतिकता को प्रभावित करती है।यह ब्योरा जनता के लिए केवल जानकारी नहीं, बल्कि एक अवसर है अपने प्रतिनिधियों की जीवनशैली को समझने का। लोकतंत्र का अर्थ केवल चुनावी प्रक्रिया नहीं, बल्कि उस प्रक्रिया में शामिल नेताओं की पारदर्शिता भी है।

जुबानी तीर

“ नेपाल में बढ़ती हिंसा **"heart-rending"** है। मैं शांति और समृद्धि की अपील करता हूं ।नेपाल की स्थिरता भारत के लिए सर्वोपरि है।

नरेंद्र मोदी (भारत के प्रधानमंत्री)

“ राहुल गांधी 'टूलकिट' तथा विदेशी शक्तियों के साथ मिलकर भारत में नेपाल जैसी स्थिति उत्पन्न करने की साजिश रच रहे हैं।

निशिकांत दुबे (BJP सांसद)

“ **UBT** जैसी स्थिति किसी भी देश में हो सकती है। **Beware!** पीएम मोदी जी भारत में भी **Nepal-** जैसे हालात बन सकते हैं।

संजय राउत (शिव सेना (UBT)

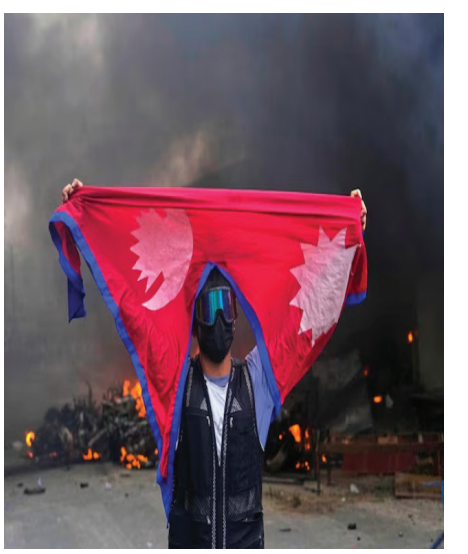

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

कम उम्र में सफेद बाल को काला करने का आयुर्वेदिक उपाय

@ डॉ महिमा मक्कर

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में कम उम्र में ही बालों का सफेद होना एक आम समस्या बन चुकी है। जहाँ पहले बालों के सफेद होने को बढ़ती उम्र का लक्षण माना जाता था, वहीं अब यह 18–20 साल की उम्र के युवाओं में भी देखने को मिल रहा है। सफेद बाल न केवल लुक और व्यक्तित्व पर असर डालते हैं, बल्कि आत्मविश्वास को भी कम कर देते हैं। आधुनिक जीवनशैली, गलत खान-पान और तनाव ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है। आयुर्वेद में इसका समाधान मौजूद है, जो प्राकृतिक और सुरक्षित है।

कम उम्र में सफेद बाल होने के प्रमुख कारण

तनाव और चिंता : लगातार तनाव से शरीर में हार्मोनल असंतुलन होता है। इससे बालों की जड़ों में मेलेनिन का उत्पादन कम हो जाता है और बाल सफेद होने लगते हैं।

खान-पान की गड़बड़ी: जंक फूड, पैकेज्ड फूड, तैलीय और तिखा भोजन शरीर को आवश्यक पोषण नहीं दे पाता। विटामिन B12, आयरन, कॉपर और प्रोटीन की कमी से बाल समय से पहले सफेद होने लगते हैं।

अनुवांशिक कारण: यदि परिवार में किसी के कम उम्र में बाल सफेद हुए हैं, तो यह समस्या अगली पीढ़ी में भी देखने को मिल सकती है।

रसायनिक उत्पादों का प्रयोग: हेयर जेल, कलर, स्प्रे और शैम्पू में मौजूद केमिकल्स बालों की जड़ों को नुकसान पहुँचाते हैं और समय से पहले बालों को सफेद कर देते हैं।

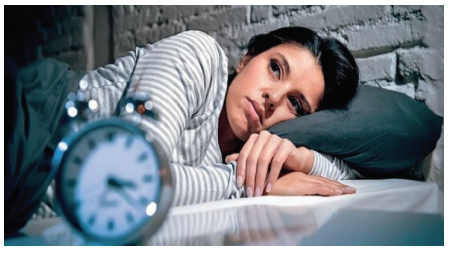

नींद की कमी: पर्याप्त नींद न मिलने से शरीर में विषाक्त तत्व (toxins) जमा हो जाते हैं और यह बालों की सेहत पर असर डालते हैं।

धूम्रपान व शराब: यह आदतें शरीर में ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस बढ़ाती हैं, जिससे बालों के कालेपन पर सीधा असर होता है।

आयुर्वेद में सफेद बालों का कारण

आयुर्वेद के अनुसार, बालों का रंग मेलेनिन और शरीर के पित्त दोष से जुड़ा होता है। जब पित्त असंतुलित हो जाता है, तो मेलेनिन का उत्पादन कम हो जाता है और बाल जल्दी सफेद हो जाते हैं।आयुर्वेद में इसे "अकालपलित्य" कहा गया है, जिसका अर्थ है , समय से पहले बालों का सफेद होना।

आयुर्वेदिक उपाय: सफेद बालों को काला करने के घरेलू नुस्खे

1. आंवला (Indian Gooseberry)

आंवला बालों के लिए संजीवनी मानी जाती है। इसमें मौजूद विटामिन C और एंटीऑक्सीडेंट बालों की जड़ों को मजबूत बनाते हैं और उन्हें काला करते हैं।

उपयोग:

आंवला पाउडर को नारियल तेल या तिल के तेल में मिलाकर रातभर रखें और अगले दिन बालों में लगाएँ।

आंवला जूस रोज सुबह पीना भी लाभकारी है।

2. भृंगराज (Eclipta Alba)

भृंगराज को "केशराज" कहा गया है यानी बालों का राजा।

उपयोग:

भृंगराज तेल से नियमित सिर की मालिश करें।

भृंगराज चूर्ण को गुनगुने पानी या दूध के साथ लिया जा सकता है।

3. ब्राह्मी और जटामांसी

ये दोनों जड़ी-बूटियाँ तनाव कम करती हैं और मस्तिष्क को शांत रखती हैं, जिससे बालों का काला रंग लंबे समय तक बना रहता है।

उपयोग:

ब्राह्मी और जटामांसी का पाउडर रोजाना दूध के साथ लें।

4. मेहंदी और कॉफी

मेहंदी बालों को प्राकृतिक रंग देती है। कॉफी के साथ मिलाने पर यह बालों को गहरा काला करती है।

उपयोग:

मेहंदी में एक चम्मच कॉफी और थोड़ा आंवला पाउडर डालकर पेस्ट बनाएँ और बालों में लगाएँ।

5. तिल का तेल

तिल के तेल में कैल्शियम, मैग्नीशियम और प्रोटीन भरपूर होता है, जो बालों को जड़ों से मजबूत करता है।

उपयोग:

तिल के तेल की मालिश रात को सोने से पहले करें और सुबह धो लें।

6. करी पत्ता (Curry Leaves)

करी पत्ता मेलेनिन का उत्पादन बढ़ाता है।

उपयोग:

करी पत्तों को नारियल तेल में उबालकर ठंडा करें और इस तेल से बालों की मालिश करें।

7. प्याज का रस

प्याज में मौजूद सल्फर और एंजाइम बालों की जड़ों को पोषण देते हैं।

उपयोग:

प्याज का रस बालों की जड़ों में हफ्ते में 2 बार लगाएँ।

सही खान-पान और जीवनशैली है जरुरी

हरी पत्तेदार सब्जियाँ, अखरोट, बादाम, कद्दू के बीज, दूध, दही, दालें, गाजर, चुकंदर और मौसमी फल। जंक फूड, अत्यधिक मसालेदार भोजन, धूम्रपान और शराब से बचें। अनुलोम-विलोम, कपालभाति और भ्रामरी जैसे प्राणायाम तनाव को कम करते हैं और बालों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं।कम से कम 7–8 घंटे की नींद लेना जरूरी है।

आयुर्वेदिक औषधियाँ (केवल चिकित्सक की सलाह से)

नवायस लौह – रक्त शुद्धि और पाचन सुधारने के लिए।

अमलकी रसायन – सफेद बाल रोकने और बालों को काला करने में सहायक।

भृंगराज आसव – बालों की मजबूती और कालेपन के लिए।

संत नजीर जी: परमात्मा के प्रेमी, भक्ति के सागर

एक अद्भुत संत की अलौकिक यात्रा

संत नजीर जी एक ऐसे संत थे जो भगवान के प्रेम में इतने डूबे हुए थे कि उनका पूरा जीवन ही एक भक्ति का गान बन गया। संत नजीर जी तो गृहस्थ थे, लेकिन उनके जीवन में जो संतों जैसी वो अल्हड़ता और मस्ती झलकती थी, वो उनकी सबसे बड़ी खासियत थी। वो राजा-राव हो या कोई और, किसी को भी कुछ नहीं समझते थे। बस, परमात्मा की महानता और इस संसार की नश्वरता पर चिंतन करते रहते। मुसलमान तो थे, लेकिन हिंदू-मुसलमान के भेदभाव से कहीं ऊपर उठ चुके थे। रहीम और रसखान की तरह उन्होंने भगवान कृष्ण और अन्य हिंदू देवी-देवताओं के प्रति गहरी श्रद्धा दिखाई। उनके अलौकिक चरित्र पर मनन किया। वो अद्वैतवादी संत थे, सूफी मत और प्रेम-साधना से उनकी वाणी इतनी प्रभावित थी कि सुनने वाला सीधे परमात्मा के पास पहुँच जाता। स्वाभिमानी थे, अपने सुख-दुख का रोना केवल परमात्मा के सामने रोते। किसी चीज के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। लेकिन परोपकार में, दीन-दुखियों की मदद में हमेशा तत्पर रहते। उनके हृदय की वो विशालता, सहृदयता और सरसता उनकी दानशीलता से ही झलकती है। संत नजीर जी प्रतिभाशाली महापुरुष थे। उनकी रचनाओं में मानवता और आध्यात्मिकता का ऐसा समन्वय है कि पढ़कर मन शुद्ध हो जाता है। उनके नयनों में हमेशा हृदय-देवता-सौंदर्यराशि वाले परम प्रियतम भगवान की रमणीय रूप-माधुरी लहराती रहती। रसना पर प्रियतम का गुणानुवाद विहार करता रहता। नजीर जी की वाणी में अध्यात्म-रस का इतना सफल चित्रण है कि वो निस्संदेह मानवतावादी संत थे। उनका जीवन हमें सिखाता है कि भगवान का प्रेम ही सब कुछ है, बाकी सब माया है।

संत नजीर जी ने विक्रम संवत की उन्नीसवीं शताब्दी को अपनी भक्ति से सुशोभित किया। उनके जीवनकाल में दिल्ली की बादशाही और अवध की नवाबी का सितारा धीरे-धीरे डूब रहा था। भारत का मानचित्र लाल रंग से रंगता जा रहा था, अंग्रेजी प्रभुता अपने पंख फैला रही थी। ऐसी उथल-पुथल वाली स्थिति में संवत् 1792 में दिल्ली में संत नजीर जी का जन्म हुआ। कुछ लोग कहते हैं कि उनका जन्म स्थान आगरा था। उनके पिता मुहम्मद फारुक दिल्ली के धनी-मानी लोगों में गिने जाते थे। उन्होंने नजीर जी के पालन-पोषण में कभी कोई कमी नहीं आने दी। बचपन का नाम था वली मुहम्मद। देखने में बहुत सुंदर और प्रतिभाशाली थे। बचपन से ही राह चलते कविता बना लिया करते। लोग उन्हें देखकर कहते, "ये तो आगे चलकर महापुरुष बनेगा।" खेल-कूद में मन लगता था, लेकिन अंदर से एक शक्ति उन्हें अलौकिक अपार्थिव लोक के रहस्यों के चिंतन की ओर खींचती रहती। भगवान की लीला में डूबे हुए ऐसे संत का जीवन हमें प्रेरित करता है कि सच्ची भक्ति तो बचपन से ही शुरू हो जाती है।

जन्म से युवावस्था तक: भक्ति की नींव पड़ती हुई

संत नजीर जी का जन्म संवत् 1792 में हुआ, जब देश में राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई थी। पिता मुहम्मद फारुक के धन-धान्य से उनका बचपन सुखी बीता। वली मुहम्मद नाम से जाने जाते थे। उनकी प्रतिभा बचपन में ही झलकने लगी। राह चलते कविता रचते, जो सुनकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते। लेकिन खेल-कूद के बीच भी उनका मन परमात्मा की ओर लगता रहता। वो अलौकिक लोक के रहस्यों पर चिंतन करते, जो उनकी भक्ति की मजबूत नींव बनी। संवत् 1818 के लगभग अहमद शाह अब्दाली का आक्रमण होने पर वो आगरा चले आए और वहीं रहने लगे। लोगों ने उन्हें बहुत सम्मान दिया, प्रतिष्ठा प्रदान की। उस समय वो पूर्ण युवावस्था में थे और संत कवि के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। लेकिन भाग्य ने पलटा खाया। विधि ने उनके मस्तक पर दूसरी तरह की रेखा खींच दी। सुख के दिन बीत गए, अभाग्य का आक्रमण हो गया। संवत् 1826 के लगभग जाटों ने आगरा लूट लिया। इस लूट में संत नजीर जी भी लूट गए, गरीब हो गए। अब उन्होंने मकतब पढ़ाकर जीविका चलानी शुरू की और साथ ही परमात्मा का भजन करते रहे। संसार के प्रति पूरी तरह अनासक्त हो गए।

ऐसे में विलास राय नामक एक खत्री सज्जन से उनकी मित्रता हो गई। वो समय-समय पर संत नजीर जी की सहायता करते। लेकिन नजीर जी का परमात्मा में पूर्ण विश्वास था। वो अच्छी तरह समझते थे कि परमात्मा जो कुछ भी करते हैं, ठीक ही करते हैं। संसार के सुख-दुख उन्हें कभी उल्लासित या उद्विग्न नहीं कर सके। वो हमेशा उदासीन रहे। उन दिनों पेशवा आगरा में कैद थे। संत नजीर जी उनके लड़के को पढ़ाने जाते। संत तो संसार के सम्मान-अपमान से सुखी-दुखी नहीं होते। वो नितांत सरल होते हैं। पेशवा ने उन्हें चढ़ने के लिए घोड़ी दी थी। नजीर जी उसी पर बैठकर पढ़ाने आते। रास्ते में लड़कों का झुंड उन्हें चिढ़ाता तो वो मुस्करा देते। उनकी हिंदी, फारसी और अरबी का अच्छा ज्ञान था। इस ज्ञान का सदुपयोग उन्होंने भगवद्भजन और जीविका-निर्वाह में किया। एक पद में उन्होंने कहा कि वीरात्मा वो है जो हर परिस्थिति को परमात्मा की देन समझकर उसी में सुखी और संतुष्ट रहता है। अगर परमात्मा ने सोने के लिए चारपाई दी तो उसी पर सोता है, अगर हाट-बाजार में सोना पड़े तो भी चिंता नहीं सताती। टाट पर भी सोकर रात काट लेता है। संत नजीर जी के समग्र जीवन में सरलता और उच्च चिंतन का दर्शन होता है। निस्संदेह वो तत्कालीन मानवता के लिए परमात्मा की एक बहुत बड़ी देन थे। वैराग्य के तो वो मूर्तिमान रूप ही थे। अपनी रचनाओं में जो कुछ भी कहा, उसका मूलाधार उनकी अनुभूति ही था। उनके जीवन से हमें निष्पक्ष भगवद्प्रेम की शिक्षा मिलती है। भाई, सोचिए तो, ऐसे संत का जीवन कितना प्रेरणादायक है। परमात्मा का प्रेम ही सब कुछ है, बाकी सब क्षणभंगुर।

विपत्तियों में भी भक्ति अटल: त्याग और सरलता का प्रतीक

संत नजीर जी का जीवन विपत्तियों से भरा था, लेकिन उनकी भक्ति कभी डगमगाई नहीं। आगरा की लूट के बाद वो गरीब हो गए। मकतब में पढ़ाकर गुजारा करने लगे। लेकिन परमात्मा का भजन कभी नहीं छोड़ा। संसार से पूरी तरह वैराग्य हो गया। विलास राय जैसे मित्रों की मदद मिलती, लेकिन वो कभी निर्भर नहीं हुए। परमात्मा पर विश्वास अटल था। सुख-दुख आते-जाते रहे, लेकिन वो उदासीन बने रहे। पेशवा के लड़के को पढ़ाते हुए भी उनकी सरलता झलकती। घोड़ी पर आते, लेकिन रास्ते में चिढ़ाने पर मुस्कुराते। उनका ज्ञान – हिंदी, फारसी, अरबी – सब भगवान की सेवा में लगा। वो कहते, हर स्थिति परमात्मा की इच्छा है, उसी में सुख ढूंढो। अगर चारपाई मिले तो उसी पर, टाट मिले तो उसी पर। ये उनकी वैराग्य की मूर्ति थी।

जीवन से हम सीखते हैं कि सच्चा संत विपत्ति में भी भगवान को याद रखता है। उनकी अनुभूति से रची रचनाएँ हमें भगवद्प्रेम का पाठ पढ़ाती हैं। भक्ति का ये मार्ग कितना सुंदर है, जहां दुख भी आनंद बन जाता है।

दानवीर संत: हृदय की विशालता का प्रमाण

संत नजीर जी बड़े उदार और दानवीर थे। उनका हृदय इतना विशाल था कि दीन-दुखियों की मदद में यथाशक्ति तत्पर रहते। एक बार महीना पूरा होने पर वेतन मिला। मकतब से वेतन लेकर जा रहे थे कि रास्ते में एक दीन-हीन व्यक्ति ने कहा, "मेरी लड़की के विवाह के लिए कुछ रुपये चाहिए, बड़ी कृपा होगी अगर आप दें।" नजीर जी बोले, "भाई, इसमें कृपा की बात ही क्या। आपकी जरूरत मेरी से कहीं बड़ी है। ईश्वर की यही इच्छा है।" उन्होंने पूरा वेतन उस असहाय को दे दिया और घर चले गए। गरीब ने हार्दिक धन्यवाद दिया और उनकी सादगी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। नजीर जी मन ही मन प्रसन्न थे कि, "दौलत जो तेरे पास है रख याद तू ये बात। खा तू भी और अल्लाह की कर राह में खैरात।" भाई, ये दानशीलता देखकर मन भर आता है। सच्चा भक्त तो परमात्मा की दी हुई हर चीज को उसके भक्तों में बांट देता है। उनकी सहृदयता और सरसता यहीं से झलकती।

उनके नियम और निश्चय बहुत कड़े थे। टट्टू पर सवार होकर मकतब जाते। एक दिन टट्टू को चाबुक मारते हुए चाबुक किसी राहचलने वाले की पीठ पर लग गया। इससे संत नजीर जी बहुत दुखी हुए। उन्होंने चाबुक लेकर टट्टू पर कभी न बैठने का निश्चय किया। इस नियम का पालन आजीवन किया। कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। परमात्मा के दृढ़ भक्त थे। जो जरूरी हो, उसकी मांग केवल परमात्मा से करते। उन दिनों लखनऊ में नवाब वाजिद अली शाह थे, कला और काव्य प्रेमी। वो संत नजीर जी की वाणी से प्रभावित थे। उन्हें लखनऊ बुलाने की बहुत कोशिश की, लेकिन असफल रहे। रुपये भेजे प्रसन्न करने को। रात भर नजीर जी को चिंता लगी। दूसरे दिन सुबह रुपये लौटा दिए। जागतिक वैभव उन्हें भ्रमित न कर सका। उनकी भक्ति इतनी गहरी थी कि सांसारिक मोह छू ही न सके।

भगवद्भक्ति का अमृत: रचनाओं में प्रेम का सागर

संत नजीर जी ने अच्छी करनी पर बड़ा जोर दिया। सांसारिक पदार्थों की नश्वरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऊँचे महल, रुपये-पैसे, आभूषण, ठाट-बाट, हाथी-घोड़े सब पड़े रह जाएंगे। जब बनजारा लादकर चलने लगेगा, तब ये सब यहीं रह जाएंगे। इसलिए नेकी करना ही श्रेयस्कर है। उन्होंने चेतावनी दी, "सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बनजारा।" रात-दिन परमात्मा की याद करते। परमात्मा का स्मरण ही उनका प्रमुख कार्य था। उनके विरह में दीवाने बने रहते। उनकी उक्ति है, "रात-दिन हिज्र में जोगी सा बना फिरता हूँ। बेकरारी से तेरे नाम की जपता सुमरन।" वेष से गृहस्थ थे, लेकिन हृदय भगवद्भक्ति के अमिट रंग में रंगा हुआ। तन-मन से परमात्मा को चाहा। मन ने प्रेम किया और तन आराम में रहा, तो इसे बड़ा विश्वासघात बताया। आत्माराम ब्रह्म के उपासक थे, लेकिन सूफी प्रेम-साधना में आस्था रखते।

संत नजीर जी की रचनाओं में पवित्र और निर्मल भगवत्प्रेम का सुंदर चित्रण है। उन्होंने भगवान कृष्ण के बचपन की लीला का गान मौलिक ढंग से किया। उनकी मुरलीवादन-माधुरी की सरस अनुभूति की। भगवान के प्रेम में सराबोर होकर कहा कि प्रियतम का रूप देखे बिना प्राण विरह में कलप रहे हैं। कितनी विचित्रता है कि पतंग तो जल-जलकर प्राण समर्पित कर रहा, और दीपक की रुचि का पता ही नहीं चलता। उनकी उक्ति है:

"ना मेरे पख न पाँव बल, मैं अपख पिय दूर।
उड़ न सकूँ गिर गिर पड़ूँ रहें बिसूर बिसूर।
प्रीतम या मन मोहिके, कीन्हो मान गुमान।
विन देखे वा रूप के, मेरे कलपत प्रान।।
आह दई कैसी भई, अनचाहत को सग।
दीपक के भावे नहीं, जल-जल मरत पतग।।"

संत नजीर जी ने भगवान कृष्ण की बाल्यकालीन लीला के अगणित पद लिखे। उनकी रचनाओं में संसार की नश्वरता पर भी प्रकाश डाला गया। अनेक संग्रह प्रकाशित हैं। उनकी वाणी में अध्यात्म-रस इतना गहरा है कि पढ़कर भक्ति का भाव जागृत हो जाता। भगवान कृष्ण की लीलाओं का वर्णन इतना जीवंत कि लगता है जैसे स्वयं देख रहे हों। सूफी प्रभाव से प्रेम-साधना की मिठास घुली हुई। अद्वैत का दर्शन उनकी हर रचना में बिखरा पड़ा। भाई, इन रचनाओं को पढ़ो तो परमात्मा का प्रेम हृदय में उतर आता। संत नजीर जी की ये रचनाएँ भक्ति का खजाना हैं, जो हमें सांसारिक मोह से ऊपर उठाती हैं।

संदेश: भगवद्प्रेम की निष्पक्ष शिक्षा

संत नजीर जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति धार्मिक भेदभाव से ऊपर होती है। वो मुसलमान थे, लेकिन कृष्ण भक्ति में डूबे। हिंदू देवी-देवताओं का सम्मान किया। सूफी प्रेम से प्रभावित, अद्वैतवादी बने। उनका वैराग्य, दानवीरता, सरलता सब परमात्मा की भक्ति से प्रेरित। विपत्तियों में भी अटल विश्वास। रचनाओं में कृष्ण लीला, संसार नश्वरता का चित्रण। उनकी उक्तियाँ जैसे "सब ठाट पड़ा रह जाएगा" हमें नेकी का महत्व बताती। "रात-दिन हिज्र में जोगी सा" विरह की बेकरारी सिखाती। भगवान का रूप न देख पाने का दर्द पतंग-दीपक से व्यक्त किया। उनका जीवन परमात्मा की देन था। हम सबको निष्पक्ष भगवद्प्रेम अपनाना चाहिए। संत नजीर जी जैसे महापुरुष हमें याद दिलाते कि जीवन का उद्देश्य केवल परमात्मा है। उनकी भक्ति का प्रकाश आज भी जगमगाता है। हे प्रभु, हमें भी ऐसी भक्ति देना।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

कैसे मिलती है पितरों को तृप्ति और वंशजों को आशीर्वाद

7 सितंबर से शुरू हुआ पितृ पक्ष, 21 सितंबर को सर्वपितृ अमावस्या पर होगा समापन

@ अंकित कुमार

हर साल भाद्रपद मास की पूर्णिमा से लेकर आश्विन मास की अमावस्या तक का समय पितृ पक्ष के रूप में मनाया जाता है। यह 16 दिन पूर्वजों की स्मृति और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए समर्पित होते हैं। मान्यता है कि इन दिनों में श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान करने से पितर प्रसन्न होते हैं और अपने वंशजों को दीर्घायु, निरोगता, प्रसिद्धि और सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।2025 में पितृ पक्ष की शुरुआत 7 सितंबर से हुई थी और इसका समापन 21 सितंबर को सर्वपितृ अमावस्या पर होगा। आइए जानते हैं इस बार कौन-कौन सी तिथियां विशेष महत्व रखती हैं और उनका धार्मिक दृष्टि से क्या महत्व है।

पितरों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता

हिंदू धर्म में श्राद्ध केवल एक कर्मकांड नहीं बल्कि पितरों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। शास्त्रों में वर्णन है कि तिथि विशेष पर किए गए श्राद्ध से पितरों को तृप्ति मिलती है और उनकी आत्मा को सद्गति प्राप्त होती है।मान्यता है कि श्राद्ध न करने पर पितर नाराज हो सकते हैं, जिससे परिवार पर पितृ दोष का असर दिखाई देता है। वहीं, विधिपूर्वक श्राद्ध करने से कुल वंश में सुख-समृद्धि बढ़ती है और वंशजों के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं।

पितृ पक्ष 2025 की प्रमुख तिथियां

कुंवारा पंचमी श्राद्ध – 11 सितंबर 2025

पितृ पक्ष की पंचमी तिथि को कुंवारा पंचमी कहा जाता है। इस दिन उन परिजनों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु अविवाहित अवस्था में हुई हो।परंपरा है कि इस दिन अविवाहित ब्राह्मण को भोजन कराकर और दक्षिणा देकर विदा करना चाहिए। माना जाता है कि इससे अविवाहित दिवंगत आत्माओं की आत्मा तृप्त होती है और पितरों की कृपा मिलती है।

मातृ नवमी श्राद्ध – 15 सितंबर 2025

पितृ पक्ष की नवमी तिथि को मातृ नवमी कहते हैं। यह तिथि विशेष रूप से माताओं, बहनों और बेटियों को समर्पित होती है। इस दिन का श्राद्ध सौभाग्यवती श्राद्ध के नाम से भी प्रसिद्ध है।धार्मिक मान्यता है कि मातृ नवमी के दिन श्राद्ध करने से परिवार में सौभाग्य और ऐश्वर्य बना रहता है। साथ ही कुल वंश में वृद्धि होती है और मातृ शक्ति की कृपा से परिवार के लोग निरोग रहते हैं।

एकादशी श्राद्ध – 17 सितंबर 2025

पितृ पक्ष की एकादशी को इंदिरा एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस दिन श्राद्ध कर्म करने के साथ ही भगवान विष्णु की पूजा का विशेष महत्व है।कहा जाता है कि इस दिन विष्णु भगवान का पूजन और व्रत करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए इंदिरा एकादशी को श्राद्ध करने वाला परिवार न केवल पितरों की कृपा पाता है बल्कि भगवान विष्णु की कृपा से भी संपन्न होता है।

सर्वपितृ अमावस्या- 21 सितंबर 2025

पितृ पक्ष का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण दिन है सर्वपितृ अमावस्या। इसे महालय अमावस्या भी कहते हैं।इस दिन ज्ञात-अज्ञात सभी पितरों का श्राद्ध किया जाता है।जिन लोगों को अपने पूर्वजों की मृत्यु तिथि ज्ञात नहीं है, वे इस दिन तर्पण और पिंडदान कर सकते हैं।शास्त्रों में कहा गया है कि अमावस्या पर किया गया श्राद्ध पितरों को संतुष्ट करता है और परिवार से सारे दुख-दोष दूर करता है।मान्यता है कि सर्वपितृ अमावस्या के बाद पितर अपने लोक लौट जाते हैं, इसलिए यह दिन विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना गया है।

श्राद्ध करने की विधि

श्राद्ध करते समय शुद्धता और श्रद्धा दोनों का विशेष महत्व है। परंपरागत रूप से श्राद्ध में ये कार्य किए जाते हैं –

ब्राह्मण को आमंत्रित करना।

तर्पण और पिंडदान करना।

ब्राह्मण को भोजन कराना और दान-दक्षिणा देना।

जरूरतमंदों को भोजन व अन्न का दान करना।

श्राद्ध में विशेष रूप से तिल, कुशा, जल और दूध का प्रयोग किया जाता है।

शास्त्रों में उल्लेख

गरुड़ पुराण और विष्णु धर्म सूत्र में कहा गया है कि श्राद्ध करने वाला व्यक्ति पितरों के साथ-साथ देवताओं की भी कृपा प्राप्त करता है।महाभारत के अनुसार, तिथि विशेष पर श्राद्ध करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है और वे जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाते हैं।पद्म पुराण में लिखा है कि पितृ पक्ष में श्राद्ध करने से कुल वंश में सुख-समृद्धि और लंबी आयु मिलती है।

सामाजिक और पारिवारिक दृष्टि

श्राद्ध केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं बल्कि परिवार को जोड़ने वाली परंपरा भी है। पितृ पक्ष के दिनों में परिवार के लोग एकजुट होकर पूर्वजों को याद करते हैं और उनकी स्मृति में सामूहिक अनुष्ठान करते हैं।इससे नई पीढ़ी को भी अपने पूर्वजों की परंपरा और संस्कारों की जानकारी मिलती है।2025 का पितृ पक्ष 7 सितंबर से शुरू होकर 21 सितंबर तक चलेगा। इस दौरान हर तिथि का अपना महत्व है चाहे वह कुंवारा पंचमी हो, मातृ नवमी, इंदिरा एकादशी या फिर सर्वपितृ अमावस्या।

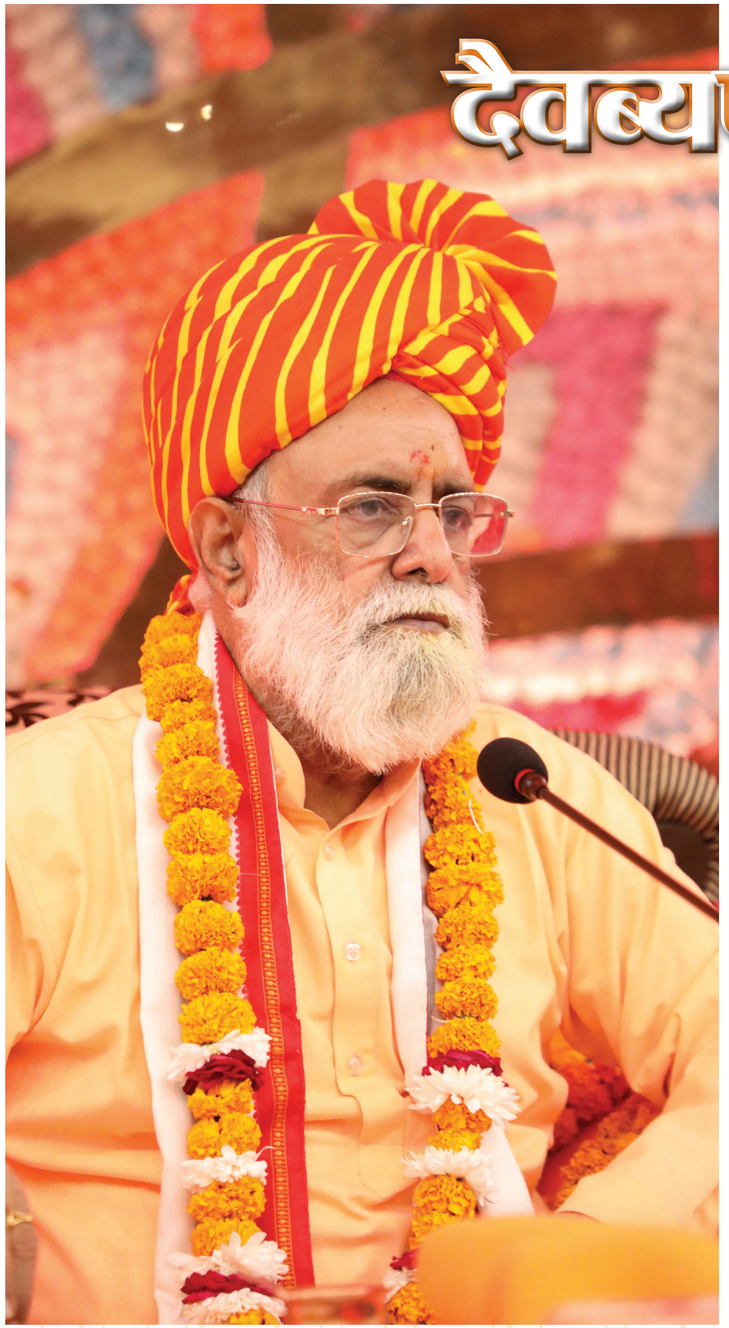

दैव्यपाश्रय है असाध्य रोगों का निवारण

मां दुर्गा ने सर्वप्रथम दैव्यपाश्रय का ज्ञान भगवान ब्रह्मा को दिया। भगवान ब्रह्मा ने दैव्यपाश्रय का ज्ञान महाब्रह्मर्षियों को दिया इसके बाद यह आगे दिया गया। लेकिन आज की स्थिति यह है कि किसी को इसके बारे में पूरा ज्ञान नहीं है। इसके बिना रोग नहीं हटेंगे चाहे कितना पाठ, हवन कर लो। इससे आपको भक्ति तो मिल जाएगी लेकिन रोग नहीं जाएंगे। रोगों व कष्टों को हटाने के लिए दैव्यपाश्रय प्रभावशाली है। यदि आपने उत्कीन, निष्कीलन, परिहार, शापोद्धार को नहीं जाना तो कुछ पी नहीं जाना और भगवान श्रीकृष्ण को भी नहीं जाना। जिसे ज्ञानका अहंकार हो जाता है उसे मां दुर्गा मोह में डाल देती है। वह अपन लक्ष्य से भटक जाता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है।

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के महामंत्री व मंच संचालक श्री सुशील वर्मा 'गुरुदास' जी ने कहा कि हम सब जानते हैं कि श्रावण व आषाढ़ मास में घनघोर वर्षा होती है, अभी यहां भी श्रद्धा और भक्ति की वर्षा हो रही है। बृज की महापावन भूमि चौमुहां ऐसा दिव्य स्थान है जो भगवान ब्रह्मा और भगवान श्रीकृष्ण की पावन स्थली है। यहां पर उपस्थित संत जानते हैं कि इस स्थान का क्या महत्व है। अभी जो यहां दृश्य उपस्थित हुआ, परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने हम पर कृपा की, वह शब्दातीत है। भगवान श्रीकृष्ण ने जो प्रेम की मुरलिया बजाई उससे हम सब श्रद्धा से भर गए और वह महापावन दृश्य साक्षात हो गया कि भगवान श्रीकृष्ण की बांसुरी सुन गोपी-ग्वाले, गाय-बछड़े मोहित हो जाते थे उसी प्रकार हम सब भी मोहित हो गए। वृंदावन भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम का बीज स्थान है, यहीं से परमात्मा की कृपा हुई है और भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम का रोपण हुआ है। यहीं पर वह स्थान है जहां पर परम पूज्य सद्गुरुदेव जी व भगवान राधा कृष्ण के आशीर्वाद से बहुत अद्भुत श्री राधा कृष्ण स्वर्ण मंदिर बनेगा।

जैसा खाए अन्न वैसा हो जाए मन

धन चाहे कितना अथाह हो लेकिन वह गलत स्रोत से आया हुआ हो तो वह अनिष्टकारी होता है। रावण के पास अथाह धन था लेकिन उसका स्रोत त्रुटिपूर्ण था। राम के पास भी धन था लेकिन वह धन धर्म और सत्य के स्रोतों से आया हुआ था। यदि अनिष्टकारी स्रोतों से आए हुए गलत धन का अन्न मनुष्य खाता है तो उसका चरित्र भी वैसा ही हो जाता है। सात्विक धन का अन्न मनुष्य को सात्विक बना देता है। इसी प्रकार तामसिक धन का अन्न मनुष्य को तामसी बना देता है। जो गलत धन का उपयोग करेगा वह व्यक्ति हमेशा दुखी रहेगा, वह ठीक से जी नहीं सकेगा, हमेशा संकटों से घिरा रहेगा। हम ऐसे लोगों के लिए भी कल्याण की कामना करते हैं कि उनका भी कष्ट दूर हो जाए। भगवान शिव की कृपा के बिना किसी का कल्याण नहीं हुआ है, किसी के दुखों का अंत नहीं हुआ है। आपने पाठ किया बारिश रुक गई, यह भगवान शिव की महाकृपा हैं।

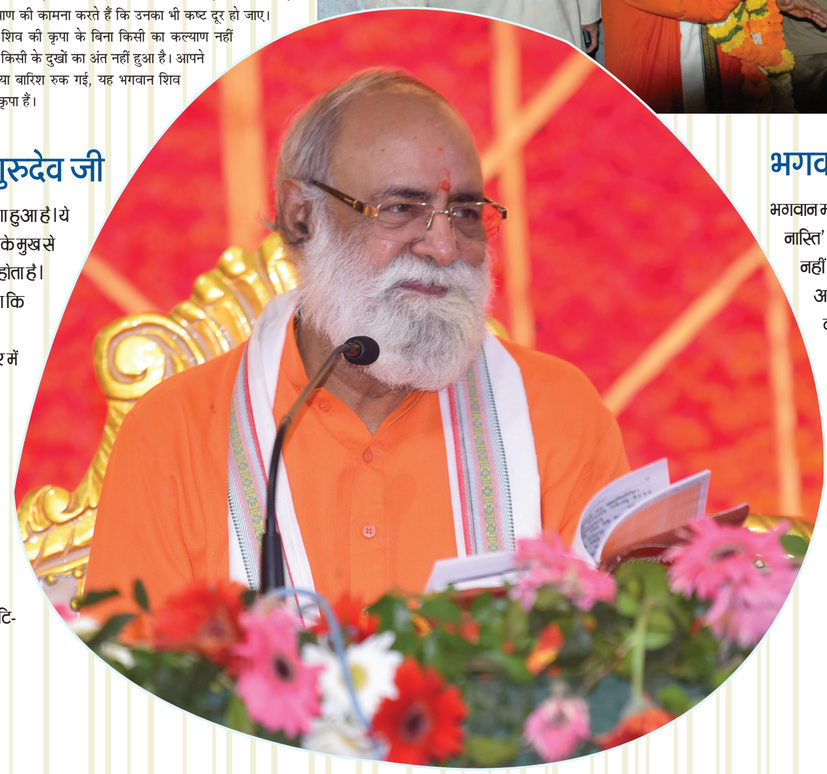

सारे शास्त्रों के तत्वों के मर्मज्ञ हैं गुरुदेव जी

पूज्य गुरुदेव जी सर्वागम तत्वज्ञ हैं। इनका जीवन परोपकार में लगा हुआ है। ये हमेशा पाठ ही करते रहते हैं और जप-पूजा में ही इनकी गति है। इनके मुख से जो भी निकलता है, पूरा हो जाता है अर्थात निष्फल नहीं होता, सफल होता है। यह ऐसे समाधिस्थ होते हैं कि इनको आसपास का पता ही नहीं चलता कि क्या हो रहा है। इनकी नाड़ी से बोध ही नहीं होता कि प्राण हैं कि नहीं। आगम शास्त्र में गुरु के गुणों का वर्णन है कि जिनका कुलीन परिवार में जन्म हुआ हो, जन्म से ही शुद्ध भाव, जितेन्द्रिय हो, समस्त आगम शास्त्र, बीज मंत्र इत्यादि के तत्वज्ञ हों, जिसे ब्रह्म का बोध हो तथा शास्त्रों का ज्ञान हो, इन्होंने 12 वर्ष की आयु में ही मयखाना ग्रंथ की रचना कर के यह सब सिद्ध कर दिया है। आप जब इसे पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि कितने ही शास्त्रों का अध्ययन गुरुदेव जी ने इस रचना से पहले कर लिया होगा। भगवान नारायण और भगवती दुर्गा इनके हृदय में विराजमान हैं और इनकी कृपा इन्हें प्राप्त है। आगम शास्त्रों में जो गुरु का स्वरूप बताया है, ऐसे पूज्य सद्गुरुदेव जी गुरु के रूप में हमारे समक्ष विद्यमान हैं। हम इन्हें कोटि-कोटि नमन, वंदन करते हैं।

डा. दिनेश कुमार गर्ग जी

राष्ट्रीय प्रवक्ता, काशी विद्वत परिषद

भगवान बीज नहीं है

भगवान मंदिर में भी है और बाहर भी है लेकिन वह एक ही है-'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'। भगवान प्रत्यक्ष भी है और अप्रत्यक्ष भी है। लेकिन इसका कोई बीज नहीं है। भगवान का बीज बन ही नहीं सकता। यहां तक कि पृथ्वी और आकाश का भी बीज नहीं बन सकता क्योंकि ये उगते नहीं हैं तो बीज कैसे बनेंगे। भगवान स्वयं ब्रह्मांड व चराचर जगत का बीज भी है और फल भी है। वृक्ष, पत्ते, तना सब कुछ है। इसे न जानने वाले कहते हैं कि ईश्वर अविनाशी है तो इसका अंश कैसे होगा? भगवान अपरा रूप में रासलीला करते हैं तो आपको लगता है कि ये अपरा हैं लेकिन ऐसा नहीं है। इनके नाम से ही न दुख होगा, न रोग होगा। इसके नाम पाठ से ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होगी।

भारत में बनी चिप की बड़ी कामयाबी

अब टेलीफोन सिस्टम भी चलेंगे अपनी तकनीक से

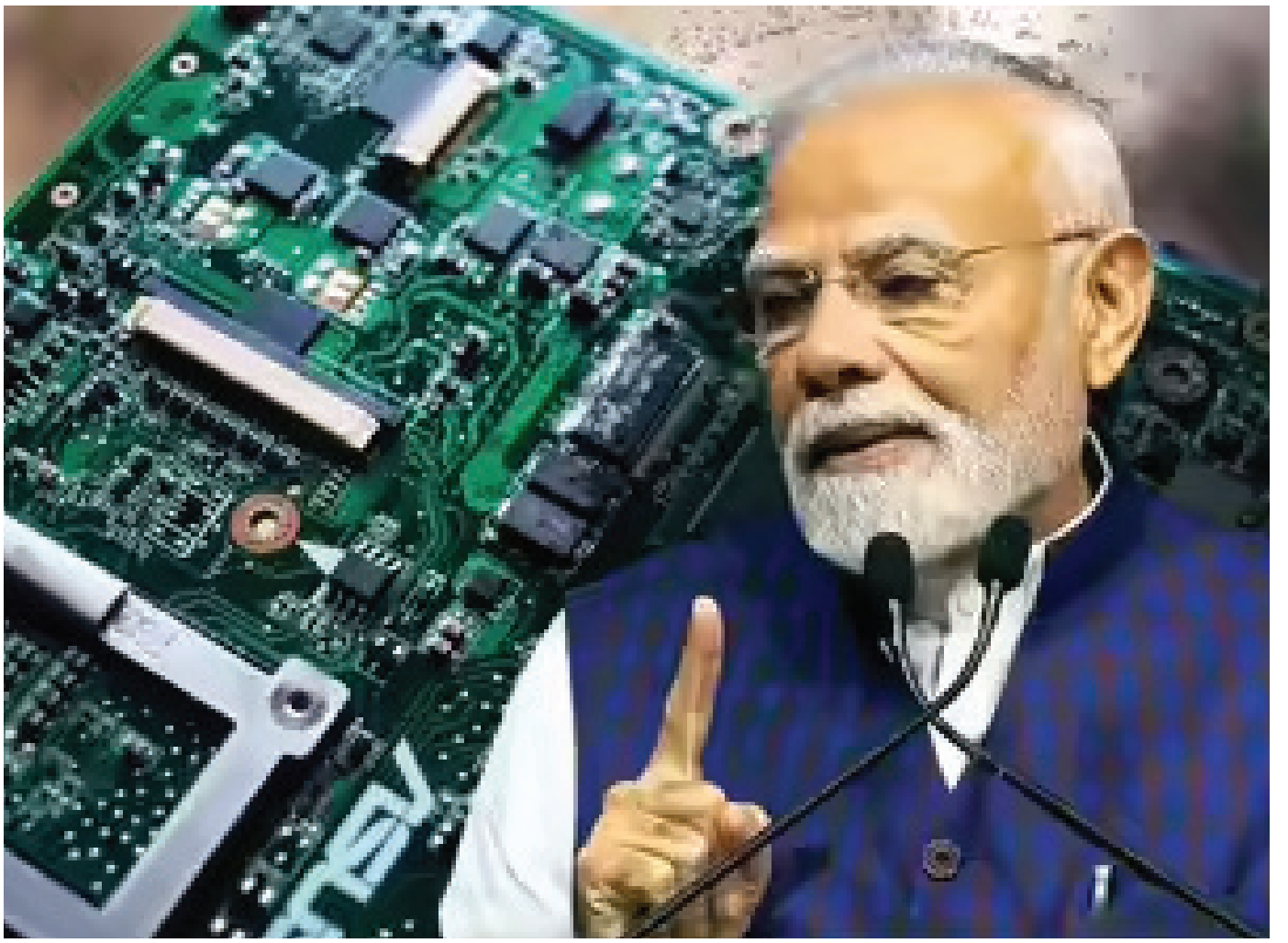

भारत के लिए बहुत खुशी की बात है। 5 सितंबर 2025 को पहली बार ऐसा हुआ है कि भारत में बनी चिप से चलने वाले टेलीफोन सिस्टम को सरकारी मंजूरी मिल गई है। इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्री अश्विनी वैष्णव जी ने इसकी खुशखबरी सोशल मीडिया पर दी है। उन्होंने कहा है कि यह भारत की चिप बनाने की कहानी में एक बड़ा कदम है।

यह केवल एक कागजी मंजूरी नहीं है। टेक यानी टेलीकॉम इंजीनियरिंग सेंटर की मंजूरी का मतलब है कि अब भारत में बनी चिप भी उतनी अच्छी हैं जितनी बाहर से आने वाली चिप। इससे हमारे फोन, इंटरनेट और दूसरे टेलीफोन के काम अच्छी तरह से चल सकते हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि अब हमें बाहर से चिप मंगाने की जरूरत कम होगी। हम अपनी चिप दूसरे देशों को भी बेच सकते हैं। यह साबित हो गया है कि भारत में बनी चिप बड़े-बड़े टेलीफोन सिस्टम चला सकती हैं। मोदी जी की मेक इन इंडिया की नीति को इससे बहुत फायदा होगा।

विक्रम प्रोसेसर: हमारी अपनी तकनीक

अगस्त-सितंबर 2025 में जब सेमीकॉन इंडिया का बड़ा कार्यक्रम हुआ, तो एक और खुशी की बात सामने आई। प्रधानमंत्री मोदी जी को भारत का पहला विक्रम 32-बिट प्रोसेसर दिया गया। यह इसरो और चंडीगढ़ की सेमीकंडक्टर लेब ने मिलकर बनाया है।

यह प्रोसेसर पुराने विक्रम 1601 का नया रूप है। पुराना वाला 2009 से इसरो के राकेट में काम कर रहा है। नए वाले में 16 के बजाय 32-बिट की क्षमता है। इसका मतलब यह है कि यह ज्यादा तेजी से काम कर सकता है और ज्यादा जानकारी को संभाल सकता है। आने वाले समय के राकेट और अंतरिक्ष मिशन के लिए यह बहुत जरूरी है।

इस विक्रम 32 की खासियत यह है कि यह बहुत ठंड (-55C) से लेकर बहुत गर्मी (125C) तक काम कर सकता है। स्पेसएक्स मिशन में इसका टेस्ट भी हो चुका है और यह सफल रहा है। इससे पता चलता है कि आने वाले समय के अंतरिक्ष मिशन में यह भरोसे से काम करेगा।

समझदारी वाली रणनीति: पुराने टेक्नोलॉजी से नई शुरुआत

भारत ने चिप बनाने में एक अक्लमंदी वाला रास्ता चुना है। सबसे नई और महंगी 5nm या 3nm वाली चिप के पीछे भागने के बजाय, हमने 28nm से 65nm वाली चिप बनाने पर ध्यान दिया है। ये चिप कार, टेलीफोन और फैक्ट्री के मशीनों में बहुत काम आती हैं।

जानकार लोगों का कहना है कि भारत का यह तरीका वैसा ही है जैसा 1970-1990 में ताइवान और साउथ कोरिया ने किया था। जबकि TSMC और सैमसंग जैसी बड़ी कंपनियां सबसे नई 5nm और 3nm चिप बनाती हैं, भारत ने दुनिया की चिप सप्लाई में एक जरूरी जगह बनाने का फैसला किया है।

यह बहुत समझदारी की बात है क्योंकि पुरानी तकनीक वाली चिप की मांग हमेशा बनी रहती है। कार के इलेक्ट्रॉनिक्स, टेलीफोन के हार्डवेयर और फैक्ट्री के कंट्रोलर में इनका भरपूर इस्तेमाल होता है। भारत के पास अच्छे इंजीनियर हैं, मजबूत इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार है और दुनिया के लिए सिस्टम बनाने की क्षमता है। इससे हमारी रणनीति सफल होने में मदद मिल रही है।

भारतीय चिप को मिली पहली मंजूरी

पैसे की बात: बाहर से मंगाने की मजबूरी से छुटकारा

भारत का सेमीकंडक्टर बाजार 2023 में 38 अरब डॉलर से बढ़कर 2024-25 में 45-50 अरब डॉलर हो गया है। 2030 तक यह 100-110 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। इससे पता चलता है कि भारत दुनिया के चिप बाजार में अपनी मजबूत जगह बना रहा है।

इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन 2021 में 76,000 करोड़ रुपए के साथ शुरू हुआ था। अब तक छह राज्यों में 10 चिप बनाने की परियोजनाओं को मंजूरी मिल चुकी है। इन सबमें कुल 1.6 लाख करोड़ रुपए का निवेश होगा। अगस्त 2025 तक सरकार ने 62.9 हजार करोड़ रुपए यानी कुल बजट का 97% पहले ही बांट दिया है।

मोदी जी ने कहा है कि 2025 के अंत तक चिप बनाने का काम व्यापारिक रूप से शुरू हो जाएगा। गुजरात के सानंद में सीजी पावर की चिप असेंबली और टेस्ट की फैक्ट्री पहले से ही अगस्त 2024 में चालू हो चुकी है। यह दिखाता है कि भारत अपने टाइम टेबल से तेज चल रहा है।

टेक मंजूरी हाल ही में आई दुनिया की चिप किल्लत के दौरान हुई भारत की समस्या का हल देती है। इससे भारत दुनिया की आपूर्ति चेन में एक भरोसेमंद विकल्प बन रहा है। खासकर जब कंपनियां ताइवान, साउथ कोरिया, जापान, चीन और अमेरिका पर निर्भरता कम करके दूसरी जगहों की तलाश कर रही हैं।

आगे की संभावनाएं और मुश्किलें

भारत की चिप क्रांति अभी शुरुआत में है, लेकिन इसकी दिशा साफ है। सेमीकॉन इंडिया 2025 में "बिल्डिंग द नेक्स्ट सेमीकंडक्टर पावरहाउस" के नाम से, भारत ने अपनी बदलाव की कहानी पेश की है। यह केवल चिप इस्तेमाल करने से बनाने वाले देश में बदलाव का निशान है।

दुनिया का सेमीकंडक्टर बाजार 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने वाला है। भारत की व्यापक योजना देश को घरेलू इस्तेमाल और निर्यात दोनों बाजारों में अच्छी जगह दिलाने की स्थिति में रख रही है। कम लागत, अच्छे इंजीनियर और सरकारी मदद का कॉम्बिनेशन एक मजबूत स्थिति बना रहा है।

लेकिन मुश्किलें भी हैं। भारत को अभी भी कच्चे माल की 80% से ज्यादा जरूरत बाहर से पूरी करनी पड़ती है। इसमें सिलिकॉन वेफर्स और खास केमिकल शामिल हैं। इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 इस समस्या से निपटने के लिए कच्चे माल बनाने वाली और पार्ट्स बनाने वाली कंपनियों को भारत लाने पर फोकस करेगा।

राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन दुर्लभ मिट्टी के तत्वों और चिप बनाने के लिए जरूरी खास चीजों के देसी स्रोत सुरक्षित करने की दिशा में काम कर रहा है। डीप टेक एलायंस की 1 अरब डॉलर की प्रतिबद्धता के साथ, भारत क्वांटम कंप्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रोसेसर और साफ ऊर्जा सेमीकंडक्टर जैसी नई तकनीकों में नवाचार की अगुवाई की दिशा में बढ़ रहा है।

टेक मंजूरी मिलने के साथ, भारत ने साबित कर दिया है कि देश में बनी चिप मुश्किल टेलीफोन सिस्टम को सफलता से चला सकती हैं। यह केवल तकनीकी कामयाबी नहीं है बल्कि आर्थिक आजादी और रणनीतिक स्वतंत्रता की दिशा में एक जरूरी कदम भी है। आने वाले समय में भारत की यह सफलता देश को दुनिया के चिप नक्शे पर एक मुख्य खिलाड़ी के रूप में बनाने में मदद करेगी।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

लालबागचा राजा के विसर्जन की प्रक्रिया

लालबागचा राजा मुंबई का एक बहुत प्रसिद्ध गणेश जी का मंडप है। हर साल गणेश चतुर्थी पर लाखों लोग यहां दर्शन करने आते हैं। यह मंडप 92 साल पुराना है और लोगों की आस्था का बड़ा केंद्र है। लेकिन उत्सव का अंत विसर्जन से होता है, जब गणेश जी की मूर्ति को समुद्र में विसर्जित किया जाता है। यह प्रक्रिया बहुत भावुक और भव्य होती है।

लालबागचा राजा का महत्व और इतिहास

लालबागचा राजा मुंबई के लालबाग इलाके में स्थित है। यह सरवजनिक गणेशोत्सव मंडल द्वारा चलाया जाता है। इस साल, 2025 में, यह अपना 92वां साल मना रहा है। मंडल की शुरुआत 1934 में हुई थी, जब मजदूरों ने अपनी मनोकामना के लिए गणेश जी की स्थापना की। आज यह मुंबई का सबसे बड़ा आकर्षण है। हर साल अगस्त के अंत में, 27 अगस्त 2025 को, मूर्ति की स्थापना होती है। मूर्ति लगभग 20 फीट ऊंची होती है और कम्बली परिवार द्वारा बनाई जाती है। वे पीढ़ियों से यह काम कर रहे हैं।

दर्शन दो प्रकार के होते हैं: मुख दर्शन और चरण स्पर्श। मुख दर्शन में सिर्फ चेहरा देखते हैं, जबकि चरण स्पर्श में पैर छू सकते हैं। लाखों लोग कतार में लगते हैं। लेकिन विसर्जन से पहले, 4 सितंबर को चरण स्पर्श की कतार बंद हो जाती है और 5 सितंबर को मुख दर्शन की। यह तैयारी के लिए होता है। ऑनलाइन दर्शन 7 सितंबर तक उपलब्ध रहता है। लोग घर बैठे यूट्यूब पर देख सकते हैं। यह उत्सव सिर्फ धार्मिक नहीं है। यह लोगों को एकजुट करता है। अमीर-गरीब, हर धर्म के लोग आते हैं। लेकिन सोचिए, इतनी भीड़ में क्या चुनौतियां होती हैं? ट्रैफिक रुक जाता है, प्रदूषण बढ़ता है। फिर भी, यह मुंबई की संस्कृति का हिस्सा है। क्या हम इसे और बेहतर बना सकते हैं? जैसे कि पर्यावरण के अनुकूल मूर्तियां इस्तेमाल करके। लालबागचा राजा की मूर्ति पारंपरिक प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनती है, जो समुद्र को गंदा कर सकती है। कुछ सालों से इको-फ्रेंडली विकल्पों पर विचार हो रहा है। यह संतुलन जरूरी है। उत्सव खुशी देता है, लेकिन प्रकृति का ख्याल भी रखना चाहिए।

मंडल दान भी इकट्ठा करता है। लोग सोना, चांदी और पैसे चढ़ाते हैं। यह पैसा समाज सेवा में लगता है, जैसे कि अस्पताल और शिक्षा। इससे लगता है कि गणेश जी सिर्फ पूजा के लिए नहीं, बल्कि मदद के लिए भी हैं। 2025 में, उत्सव 27 अगस्त से 6 सितंबर तक चला। अंत में विसर्जन होता है, जो सबसे भावुक पल है। लोग रोते हैं, क्योंकि अगले साल फिर इंतजार करना पड़ता है।

विसर्जन की तैयारी: क्या-क्या होता है?

विसर्जन की तैयारी कई दिनों पहले शुरू हो जाती है। मंडल के सदस्य मूर्ति को सजाते हैं। रथ तैयार किया जाता है, जो बड़ा और सजा हुआ होता है। यह रथ बिजली से चलने वाला भी हो सकता है, ताकि आसानी से ले जाया जा सके। २०२५ में, इलेक्ट्रिक राफ्ट का इस्तेमाल किया गया है immersion के लिए। यह सुरक्षित और आधुनिक तरीका है।

6 सितंबर की सुबह, अंतिम आरती होती है। लोग "गणपति बप्पा मोरया, पुढच्या वर्षी लवकर या" चिल्लाते हैं। मूर्ति को रथ पर रखा जाता है। ढोल-ताशा बजते हैं। नाच-गाना शुरू हो जाता है। पुलिस और फायर ब्रिगेड तैयार रहते हैं। क्योंकि भीड़ लाखों में होती है। ट्रैफिक बंद कर दिया जाता है। वैकल्पिक रास्ते बताए जाते हैं।

तैयारी में सामुदायिक सद्भाव भी शामिल है। जैसे कि बायकुला में हिंदुस्तानी मस्जिद पर रुकना। वहां मस्जिद कमिटी श्रद्धांजलि देती है। यह दिखाता है कि उत्सव धर्मों को जोड़ता है। लेकिन सोचिए, इतनी बड़ी तैयारी में क्या जोखिम हैं? भीड़ में दुर्घटना हो सकती है। इसलिए, मंडल और सरकार मिलकर प्लान बनाते हैं। सीसीटीवी, एम्बुलेंस सब तैयार।

मूर्ति बनाने से लेकर विसर्जन तक, सब कुछ पारंपरिक है। लेकिन आधुनिक टच भी है, जैसे लाइव स्ट्रीमिंग। लोग दूर से देख सकते हैं। यह अच्छा है, क्योंकि हर कोई नहीं पहुंच सकता। तैयारी से लगता है कि यह सिर्फ एक रस्म नहीं, बल्कि एक बड़ा आयोजन है। क्या हम इसमें और सुधार कर सकते हैं? जैसे कि प्लास्टिक कम करके।

मिरवणूक का सफर: रास्ता और समय

मिरवणूक यानी जुलूस, 6 सितंबर को सुबह 10 से 12 बजे शुरू होता है। यह लगभग 7-8 किलोमीटर का रास्ता है, लेकिन 20-24 घंटे लगते हैं। क्योंकि भीड़ बहुत है। रास्ता लालबाग से शुरू होकर गिरगांव चौपाटी पर खत्म होता है।

पहला पड़ावः चिंचपोकली रेलवे ब्रिज, दोपहर 1 से 2 बजे। यहां लोग फूल बरसाते हैं। फिर बायकुला स्टेशन, दोपहर 3 से 5 बजे। यहां हिंदुस्तानी मस्जिद पर रुकते हैं। फायर ब्रिगेड सायरन बजाता है। यह सद्भाव का प्रतीक है।

शाम 7 से 9 बजे, नागपाड़ा जंक्शन। यहां खड़ा पारसी और क्लेयर रोड है। फिर गोल देवल, रात 10 से 12 बजे। दो टैंक एरिया में उत्साह बढ़ जाता है। रात 2 से 4 बजे, ओपेरा हाउस ब्रिज। सीपी टैंक, प्रार्थना समाज, एसवीपी रोड से गुजरता है। आखिर में, 7 सितंबर सुबह 5 से 7 बजे, गिरगांव चौपाटी पहुंचता है।

रास्ते में रुक-रुक कर आरती होती है। लोग प्रसाद बांटते हैं। ढोल बजते हैं। नाचते हैं। लेकिन ट्रैफिक की समस्या होती है। कई रोड बंद। वैकल्पिक रास्तेः जैसे कि ईस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे। यह सफर थकाने वाला है, लेकिन आस्था से भरा। सोचिए, इतने लोग एक साथ चलते हैं। यह एकता दिखाता है। लेकिन पर्यावरण पर असर? समुद्र में मूर्ति डालने से गंदगी। कुछ जगह कृत्रिम तालाब बनाए जाते हैं, लेकिन लालबागचा राजा समुद्र में ही जाता है।

विसर्जन की रस्में: भावना और परंपरा

विसर्जन की मुख्य रस्म चौपाटी पर होती है। मूर्ति को पानी में ले जाते हैं। अंतिम आरती। लोग रोते हैं। चिल्लाते हैं "मोरया रे, बप्पा मोरया रे"। फिर मूर्ति को समुद्र में विसर्जित करते हैं। यह प्रतीक है कि गणेश जी कैलाश लौट रहे हैं। प्रसाद बांटा जाता है।

परंपरा में फूलों की वर्षा शामिल है। जैसे कि श्रॉफ बिल्डिंग पर। मंडल महा आरती आयोजित करता है। संगीत, ड्रम। नृत्य। यह 10 दिनों की पूजा का समापन है। लेकिन सोचिए, यह अंत क्यों? क्योंकि जीवन चक्र जैसा है। आना-जाना।

विसर्जन के बाद: विचार और प्रभाव

विसर्जन के बाद, सफाई शुरू होती है। मंडल और नगर निगम मिलकर चौपाटी साफ करते हैं। लेकिन प्रदूषण की समस्या रहती है। प्लास्टर ऑफ पेरिस से पानी गंदा होता है। मछलियां प्रभावित। सरकार इको-फ्रेंडली मूर्तियां प्रोत्साहित करती है। लालबागचा राजा भी विचार कर रहा है।

सामाजिक प्रभावः उत्सव एकता लाता है। विभिन्न धर्म मिलते हैं। आर्थिक रूप से, दुकानें चलती हैं। लेकिन ट्रैफिक से नुकसान। 2024 में, बारिश हुई, लेकिन उत्साह नहीं रुका। सोचिए, यह उत्सव हमें क्या सिखाता है? खुशी, लेकिन जिम्मेदारी। अगले साल फिर आएगा। क्या हम बेहतर तैयारी करेंगे?

उत्तर भारत में बाढ़ और बारिश का कहर

उत्तर भारत में इस साल अगस्त महीने में हुई भारी बारिश ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर जैसे इलाकों में बाढ़ और भूस्खलन से लोग परेशान हो गए। पंजाब में 43 लोग मारे गए और हजारों हेक्टेयर फसल बर्बाद हो गई। हिमाचल और अन्य जगहों पर भूस्खलन ने रास्ते बंद कर दिए और घर उजड़ गए। यह आपदा हमें सोचने पर मजबूर करती है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के क्या नतीजे हो सकते हैं। लेकिन लोग मजबूत हैं और मदद से फिर से खड़े हो रहे हैं। आइए देखें कि क्या हुआ और क्यों।

पंजाब में आई तबाही की कहानी

पंजाब में इस बार की बाढ़ कई दशकों की सबसे बुरी बाढ़ बताई जा रही है। अगस्त 26 से शुरू हुई भारी बारिश ने पूरे राज्य को प्रभावित किया। 23 जिलों में बाढ़ आई और 1400 से ज्यादा गांव डूब गए। लगभग 3.3 मिलियन लोग प्रभावित हुए। मौतों की संख्या 43 पहुंच गई, जिसमें बच्चे और बूढ़े भी शामिल हैं। लोग अपने घर छोड़कर सुरक्षित जगहों पर जाना पड़ा। सेना और राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) ने हजारों लोगों को निकाला। कुछ जगहों पर हेलीकॉप्टर से मदद पहुंचाई गई।

फसलों का नुकसान बहुत बड़ा है। लगभग 1.71 लाख हेक्टेयर जमीन पर फसलें बर्बाद हो गईं। बासमती चावल की फसल सबसे ज्यादा प्रभावित हुई, जो भारत के निर्यात का बड़ा हिस्सा है। किसान कहते हैं कि 20-25 प्रतिशत उत्पादन कम हो सकता है। कई किसानों को अगली फसल तक इंतजार करना पड़ेगा। राज्य सरकार ने इसे आपदा घोषित किया और मुआवजे का वादा किया। केंद्र सरकार से भी मदद मांगी गई। यह स्थिति हमें बताती है कि किसान कितने कमजोर हैं और मौसम की मार कैसे पूरी अर्थव्यवस्था को हिला सकती है। लेकिन किसान फिर से बोएंगे और उम्मीद रखेंगे। क्या हम उनकी मदद के लिए तैयार हैं?

हिमाचल प्रदेश में भूस्खलन का दर्द

हिमाचल प्रदेश में बारिश ने सबसे ज्यादा कहर बरपाया। यहां मौतों की संख्या 343 पहुंच गई। जून 20 से अब तक 95 फ्लैश फ्लड, 45 क्लाउडबर्स्ट और 127 बड़े भूस्खलन हुए। 1000 से ज्यादा सड़कें बंद हो गईं, जिनमें चार राष्ट्रीय राजमार्ग शामिल हैं। 2100 ट्रांसफॉर्मर खराब हो गए और 800 पानी की योजनाएं प्रभावित हुईं। मंडी, कुल्लू, चंबा और शिमला जैसे पर्यटन वाले इलाके सबसे ज्यादा प्रभावित हुए। कई पर्यटक फंस गए और उन्हें निकालना पड़ा।

आर्थिक नुकसान 3690 करोड़ रुपये से ज्यादा का है। घर, सड़कें और पुल टूट गए। शिमला में एक बड़ा भूस्खलन हुआ, जिसमें इमारतें बह गईं। सरकार ने भारी मशीनें लगाईं और सड़कें खोलने की कोशिश की। सेना और एनडीआरएफ ने बचाव किया। यह आपदा हमें याद दिलाती है कि पहाड़ी इलाकों में विकास कितना सावधानी से करना चाहिए। बिना सोचे-समझे सड़कें और होटल बनाना खतरा बढ़ाता है। लोग अब सोच रहे हैं कि क्या जलवायु परिवर्तन इसके पीछे है? हिमाचल के लोग मजबूत हैं, लेकिन उन्हें मदद की जरूरत है। क्या हम उनकी आवाज सुनेंगे?

उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर की मुश्किलें

उत्तराखंड में भी बारिश ने बहुत नुकसान किया। अगस्त 5 को उत्तरकाशी में फ्लैश फ्लड आया, जिसमें 5 लोग मारे गए और 50 से ज्यादा लापता हैं। धाराली गांव में कीर गंगा नदी उफन गई और गांव डूब गया। सेना ने हेलीकॉप्टर से 50 लोगों को बचाया। अप्रैल से अगस्त तक 75 मौतें हुईं। भूस्खलन से सड़कें बंद हो गईं और चार धाम यात्रा प्रभावित हुई। सरकार ने एनडीआरएफ और आईटीबीपी को लगाया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने हालात देखे और मदद का वादा किया।

जम्मू-कश्मीर में स्थिति और भी गंभीर है। 132 मौतें हुईं और 33 लोग लापता हैं। क्लाउडबर्स्ट और भूस्खलन से रोड बंद हो गए। वैष्णो देवी मंदिर के रास्ते पर भूस्खलन से 34 लोग मारे गए। जम्मू में 380 मिलीमीटर बारिश हुई, जो रिकॉर्ड है। तवी और चिनाब नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। 5000 से ज्यादा लोगों को निकाला गया। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने प्रधानमंत्री से बात की और मदद मांगी। यह इलाके पर्यटन पर निर्भर हैं, लेकिन अब सब ठप है। लोग सोचते हैं कि पुरानी बाढ़ों से क्या सीखा? 2014 की बाढ़ के बाद भी वही गलतियां दोहराई जा रही हैं। क्या अब बदलाव आएगा?

कारण, प्रभाव और आगे की सोच

यह आपदा सिर्फ बारिश की वजह से नहीं हुई। जलवायु परिवर्तन ने बारिश को ज्यादा तीव्र बनाया है। विशेषज्ञ कहते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग से क्लाउडबर्स्ट बढ़े हैं। इसके अलावा, बिना योजना के विकास ने समस्या बढ़ाई। पहाड़ों में सड़कें और बांध बनाते समय पर्यावरण का ख्याल नहीं रखा गया। नदियों के किनारे अवैध निर्माण ने बाढ़ को आमंत्रित किया। कुल मिलाकर 500 से ज्यादा मौतें हुईं और अरबों का नुकसान। अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई, किसान बर्बाद हो गए और पर्यटन रुक गया।

सरकार ने अच्छा काम किया। सेना, एनडीआरएफ और स्थानीय लोग मिलकर बचाव कर रहे हैं। राहत कैंप बनाए गए और मुआवजा देने का वादा हुआ। लेकिन सवाल है कि आगे क्या? क्या हम बाढ़ रोकने के लिए बेहतर योजना बनाएंगे? नदियों को साफ रखना, जंगलों को बचाना और स्मार्ट विकास करना जरूरी है। लोग अब सोच रहे हैं कि प्रकृति से लड़ना नहीं, उसके साथ चलना चाहिए। यह आपदा एक सबक है। अगर हम नहीं सुधरे, तो ऐसी घटनाएं बढ़ेंगी। लेकिन उम्मीद है, लोग मिलकर बेहतर कल बनाएंगे। क्या आप तैयार हैं बदलाव के लिए?

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

घर में आँगन था

घर में आँगन था,
आँगन में आसमान था,

सूरज, चाँद और सितारे थे,
धरती के साथ हवा,

बादल और बारिश थी,
तुलसी का बिरवा था,

चहचहाती,दाना चुगती गौरैया थी
लाल चोंच वाले सुग्गे थे

मैना थी, कबूतर थे,
काँव-काँव करते कौवे थे

और शाम में झींगुरों का समूह गान था।
एक कोने पर गुल हज़ारा के पौधे थे

जिनमें बड़े ही सौम्य-शालीन पुष्प लगे रहते थे
जो पूरी रात जगकर

सुबह होने तक धरती पर
अपने फूलों से रंगोली बना देते थे।

आँगन सुबह-शाम बुहारा जाता था,
गर्मियों में पानी के छींटे दिए जाते थे।

कभी-कभी मेरी आजी
आँगन को गोबर से लीप देती थीं

उस दिन देवता उतर आते थे
आसमान से आँगन में,

वह मंदिर हो जाता
और हम जूते बाहर उतार देते।

बरसात की पहली बारिश के साथ
आँगन से बड़ी ज़ोर से उठती

माटी की सोंधी ख़ुशबू
जिसे हम ज़ोर से साँस खींचकर

भरते अपनी साँसो में माटी की महक
जो धीरे-धीरे रगों तक में फैल जाती।

तेज बारिश में आँगन जब झील बन जाता
हम उतार देते उसमें

अपनी काग़ज़ की कश्तियाँ और शिकारे
और उसमें चींटे-चींटियों को कराते

दुनियाँ के इस छोर से
उस छोर तक की सैर।

आसमान से उतरते पक्षियों का
प्रथम स्वागत करती थी आँगन की मुँड़ेर।

इसी मुँड़ेर पर बैठकर
कौवे किसी पाहुन के आने की

पूर्व सूचना दे जाते थे,
शायद यहीं से ताक-झाँक करते हुए

कोई कागा हमारे लोक गीतों की
एक नायिका की नथ लेकर,

उसके सोए प्रेमी को धता बताते हुए
चुपके से चंपत हो गया था

तभी तो आज तक सुनाई पड़ता है
उसका यह ताना कि—

नकबेसर कागा ले भागा
मोरा (मेरा) सैंया अभागा ना जागा।

इसी आँगन की मुँड़ेर पर ही
खिड़रिच (खंजन) लेकर आते

वर्षा से धुले हुए शारदीय दिन और रातें
तो माँ उन्हें देखते ही प्रणाम करती

और दौड़ी चली आती
हमें भी दिखाने के लिए

तो हमारे भी हाथ जुड़ जाते
एक पखेरू-दर्शन परंपरा के सम्मान में।

जब कभी आँगन में सुखवन पड़ता
मुझे पक्षियों से निगरानी करने के लिए

बैठा दिया जाता,
मेरी सारी कोशिशों के बावजूद

वे अपना हिस्सा ले ही जाते थे।
मेरा मन-पखेरु किताबों में

अक्षरों के दाने चुग रहा होता
और वे अनाजों के दाने।

सुबह और शाम गाँव के सभी आँगनों से
उठता था धुँआ

जो सह नौ भुनक्तु के उद्घोष के साथ
मिलकर आसमान में छा जाता था

और इस बात की तसदीक करता था
कि घरों में चूल्हे जले हैं।

आँगन में ही शाम में
महिलाओं की चौपाल लगती,

आँगन में ही शादी का मड़वा बनता,
हल्दी और मटकोर की रस्में होतीं,

आँगन में ही रात में
विवाह की सप्तपदी होती

और अगले दिन दोपहर में
खिचड़ी खाने की रस्म होती

और दूल्हे को फूल के बर्तन में
खाना परोसा जाता था,

पहले वह कोहनाता था
फिर मान-मनौवल होने पर

और उसकी माँगे पूरी होने पर
खिचड़ी खाता था।

और फिर महिलाओं की
गुड़ लगी गालियों से होता

त्रेता युग से चली आ रही
एक परंपरा का निर्वाह—

जेंवत देहि मधुर धुनि गारी,
ले-ले नाम पुरुष अरु नारी॥

दिन में अगर सूरज आ बैठता था आँगन में
तो रात में चाँद सितारे भी उतर आते थे आँगन में,

किसी अँधेरी रात में तो
पूरा आँगन ही तारामंडल बन जाता

कहीं कचपचिया तारे चिढ़ा रहे होते
तो सप्तर्षि अपनी वरदा-मुद्रा के साथ खड़े मिलते।

अरुंधती, अगस्त्य, रोहिणी और जाने कितने तारे
अपने द्युति लोक से आँगन में निहारते रहते।

आँगन हमारे मन का प्रतिबिंब था,
वहाँ पीढ़ियों और परिवार की परंपरा

सजदे में झुकी हुई मिलती थी,
वहाँ कोई अँगुली तर्जनी थी

कोई मध्यमा थी
कोई अनामिका और कनिष्ठिका

लेकिन उन सबके मिलने से
बना हुआ एक विशालकाय हाथ था

जो सबके सिर पर धरा हुआ था।
वह रक्षति रक्षितः का एक

पारिवारिक भाष्य था।
आँगन जहाँ शील और शर्म जैसे

संस्कारों के गुरुकुल थे
तो अंतर्मुखता की उलझी गाँठों को

खोलने की मुँहफट चाभियाँ।
वहाँ दिन भर के थके-हारे मन

शाम को टिका लेते थे सिर
किसी दुनिया ढोकर बूढ़े हुए कंधे पर,

कभी-कभी सुबक भी लेते थे
और हलके हो जाते थे।

अक्सर घुटनों पर चलकर आती
कोई दंतुरित मुस्कान

पल भर मे हर लेती थी
सारा तनाव और थकान।

जब तक घर में आँगन था
मन में भी आँगन था,

तब मन में भी अवकाश था,
विश्वास था, आश्वास था,

साहचर्य था, सच्चाई थी
और आँगन की वह भूमि

सभी रिश्तों की साझी कमाई थी।

अखिलेश जायसवाल
नवें दशक में सामने आए
संवेदनशील कवि, लेखक।

दिल्ली में आवारा कुत्तों पर बड़ी कार्रवाई

हर कुत्ते को लगेगी माइक्रोचिप, बनेगी खाने की जगहें

रेबीज पर लगेगा ब्रेक, आबादी पर काबू और सुरक्षा बढ़ाने की तैयारी

@ सौम्या चौबे

दिल्ली में आवारा कुत्तों की संख्या लाखों में पहुंच चुकी है। आए दिन कुत्तों के झुंड से आम लोगों, खासकर बच्चों और बुजुर्गों पर हमले की खबरें आती रहती हैं। अब इस समस्या को हल करने के लिए दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) ने बड़ा कदम उठाया है। शहर के लगभग 10 लाख आवारा कुत्तों को माइक्रोचिप लगाने की योजना पर काम शुरू कर दिया गया है। यह फैसला सीधे तौर पर लोगों की सुरक्षा, रेबीज नियंत्रण और कुत्तों की आबादी पर रोक लगाने से जुड़ा हुआ है।

माइक्रोचिपिंग से कैसे मिलेगा फायदा?

एमसीडी की योजना के मुताबिक, हर आवारा कुत्ते की पहचान अब माइक्रोचिप के जरिए होगी। इस छोटे से चिप में कुत्ते का पूरा डेटा रहेगा—उसकी नसबंदी हुई है या नहीं, टीकाकरण कब हुआ था, उसकी सेहत कैसी है और वह किस इलाके का है।कुत्तों की सही गिनती और पहचान संभव होगी और रेबीज जैसी बीमारी पर नियंत्रण आसान होगा। साथ ही कुत्तों की आबादी प्रबंधन वैज्ञानिक तरीके से किया जा सकेगा।किसी इलाके में कुत्तों की संख्या अधिक होने पर तुरंत कार्रवाई की जा सकेगी।

समिति और निगरानी व्यवस्था

एमसीडी ने इस काम को व्यवस्थित ढंग से करने के लिए एनिमल मार्केट मॉनिटरिंग कमेटी बनाने का फैसला किया है। यह कमेटी पशु बाजारों, पालतू जानवरों की दुकानों और शेल्टर होम की गतिविधियों पर नजर रखेगी। हर जिले में पशु कल्याण समितियां बनाई जाएंगी।

शिक्षा विभाग के साथ मिलकर स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।सभी पेट शॉप्स का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा, ताकि कोई भी बिना अनुमति के जानवरों की बिक्री न कर सके।

कुत्तों को खाना खिलाने के लिए तय होंगी जगहें

कुत्तों को कहीं भी, कभी भी खाना खिलाने की प्रथा अब बदलेगी। अक्सर ऐसा होता है कि लोग सार्वजनिक स्थानों—गली, पार्क या सड़क पर अचानक खाना डाल देते हैं। इससे वहां झुंड बनने लगते हैं और टकराव की स्थिति पैदा होती है।

एमसीडी की स्थायी समिति की अध्यक्ष सत्या शर्मा ने निर्देश दिया है कि हर वार्ड में 3 से 4 निश्चित जगहों को चिन्हित किया जाए, जहां कुत्तों को खाना खिलाया जा सके। इससे फायदा यह होगा कि कुत्तों को नियमित जगह पर खाना मिलेगा। अनियंत्रित झुंड बनने की समस्या कम होगी। और कुत्तों के काटने की घटनाओं में कमी आएगी।

सुप्रीम कोर्ट का दबाव और एमसीडी की तैयारी

दरअसल, हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने एमसीडी को फटकार लगाई थी और कहा था कि कुत्तों के काटने की घटनाओं पर तुरंत रोक लगाई जाए। इसके बाद ही एमसीडी ने तेज़ी दिखाई और यह नई योजना सामने आई। सत्या शर्मा ने सभी अधिकारियों को आदेश दिया है कि इस योजना पर एक सप्ताह के भीतर रिपोर्ट पेश करें।

नसबंदी और टीकाकरण पर जोर

दिल्ली में पहले से ही पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) केंद्र चल रहे हैं। लेकिन अब इन केंद्रों पर काम की रफ्तार तेज होगी।हर कुत्ते की नसबंदी की जाएगी ताकि उनकी संख्या पर नियंत्रण रहे। टीकाकरण नियमित रूप से होगा ताकि रेबीज जैसी जानलेवा बीमारी पर रोक लग सके।

जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं

सत्या शर्मा ने कहा है कि यह जिम्मेदारी केवल एमसीडी की नहीं है। इसके लिए स्थानीय पार्षदों, निवासियों और एनजीओ को भी आगे आना होगा।उन्होंने कहा, "लोगों को समझना होगा कि कुत्तों को अनियंत्रित तरीके से कहीं भी खाना खिलाना सही नहीं है। हमें उन्हें सुरक्षित जगहों पर खाना खिलाना होगा। इस काम में सभी को सहयोग करना जरूरी है।"

बच्चों और बुजुर्गों के लिए राहत

दिल्ली में कुत्तों के काटने के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। खासकर पार्कों और स्कूलों के आसपास यह समस्या ज्यादा है। ऐसे में यह योजना बच्चों और बुजुर्गों के लिए राहत लेकर आ सकती है।माइक्रोचिपिंग और निगरानी से कुत्तों की संख्या कम होगी।तय जगहों पर खाने की व्यवस्था से गली-मोहल्लों में उनका झुंड नहीं बनेगा। नसबंदी और टीकाकरण से बीमारियां फैलने का खतरा घटेगा।

दिल्ली में करीब 10 लाख आवारा कुत्ते हैं

अनुमान है कि दिल्ली में करीब 10 लाख आवारा कुत्ते हैं। इनमें से अधिकांश की नसबंदी और टीकाकरण अभी तक नहीं हुआ है। यही वजह है कि उनकी आबादी लगातार बढ़ रही है और काटने की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। पिछले कुछ सालों में हजारों लोग कुत्तों के हमले का शिकार हो चुके हैं। अस्पतालों में रेबीज वैक्सीन की खपत भी बढ़ी है।

दूसरे देशों से सबक

दुनिया के कई देशों में आवारा कुत्तों की समस्या पर इसी तरह की योजनाएं सफल हुई हैं। सिंगापुर और जापान में कुत्तों की आबादी को नियंत्रित करने के लिए माइक्रोचिप और नसबंदी पर खास जोर दिया गया।यूरोप के कई देशों में पब्लिक फीडिंग पॉइंट बनाए गए, जिससे झुंड की समस्या खत्म हो गई। दिल्ली की यह योजना भी उसी दिशा में एक बड़ा कदम है। दिल्ली में आवारा कुत्तों पर नियंत्रण की यह पहल केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि यह जनता की सुरक्षा और सेहत से जुड़ा मुद्दा है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

राहुल गांधी की सिख समुदाय वाली टिप्पणी

क्या है पूरा माजरा?

राहुल गांधी, जो लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं, ने सितंबर 2024 में अमेरिका की यात्रा के दौरान एक कार्यक्रम में सिख समुदाय के बारे में कुछ बातें कही थीं। ये बातें भारत में काफी विवाद का कारण बनीं। लोगों ने इसे सिखों की धार्मिक आजादी पर सवाल उठाने वाला बताया। भाजपा ने इसे देश की छवि खराब करने वाला कहा, जबकि राहुल के समर्थकों ने इसे सच्चाई बताने वाला माना। इस टिप्पणी के बाद वाराणसी में एक शिकायत दर्ज हुई, जो अब इलाहाबाद हाईकोर्ट तक पहुंच गई है। कोर्ट ने अभी अपना फैसला सुरक्षित रखा है, लेकिन सुनवाई में दोनों पक्षों के तर्क सुने गए। ये मामला राजनीति, धर्म और कानून के बीच का है। आइए, इसकी पूरी कहानी समझते हैं।

सितंबर 2024 में राहुल गांधी अमेरिका गए थे। वहां वाशिंगटन डीसी के पास हर्नडन में भारतीय समुदाय से मिले। एक सिख व्यक्ति से बात करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में लड़ाई राजनीति से ऊपर है। उन्होंने पूछा कि क्या एक सिख भारत में अपनी पगड़ी पहन सकता है या कड़ा धारण कर सकता है। या क्या वो गुरुद्वारे जा सकता है। राहुल ने कहा कि ये लड़ाई सिर्फ सिखों के लिए नहीं, बल्कि सभी धर्मों के लिए है। उनका इशारा आरएसएस की विचारधारा की तरफ था, जो उनके मुताबिक कुछ धर्मों को कमतर मानती है। ये बातें सुनकर भारत में हंगामा मच गया। कुछ लोगों ने इसे सिखों को भड़काने वाला बताया, जबकि कुछ ने इसे धार्मिक आजादी की बात माना। इस टिप्पणी ने राजनीतिक बहस छेड़ दी। भाजपा ने कहा कि राहुल विदेश में देश को बदनाम कर रहे हैं। सिख समुदाय के कुछ लोग राहुल के घर के बाहर प्रदर्शन करने लगे। लेकिन राहुल ने बाद में सफाई दी कि वो सिर्फ एकता और समानता की बात कर रहे थे। क्या भारत ऐसा देश होना चाहिए जहां हर कोई बिना डर के अपनी आस्था मान सके? ये सवाल विचार करने लायक है। इस घटना से पता चलता है कि राजनीतिक बयान कैसे समाज को प्रभावित करते हैं।

ये मामला सिर्फ एक बयान का नहीं है। ये भारत की विविधता और सहिष्णुता पर सवाल उठाता है। क्या राजनीतिक नेता विदेश में ऐसी बातें कह सकते हैं? या क्या ये अभिव्यक्ति की आजादी है? दोनों पक्षों को देखना जरूरी है। एक तरफ, राहुल की टिप्पणी को संदर्भ से काटकर पेश किया गया, जैसा कि उनके वकील ने कोर्ट में कहा। दूसरी तरफ, भाजपा का कहना है कि ऐसे बयान से सिखों में असुरक्षा फैल सकती है। 1984 के सिख दंगों का जिक्र करके भाजपा ने कांग्रेस को घेरा। वो कहते हैं कि कांग्रेस के राज में सिखों पर अत्याचार हुए थे। राहुल के पिता राजीव गांधी के समय के दंगे याद दिलाए गए। लेकिन राहुल ने कहा कि भाजपा झूठ फैला रही है। वो सच्चाई बोलते रहेंगे। ये विवाद दिखाता है कि पुरानी घटनाएं आज की राजनीति में कैसे इस्तेमाल होती हैं। सिख समुदाय भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने देश के लिए बहुत योगदान दिया है। सेना में, कृषि में, व्यापार में सिखों का नाम रोशन है। लेकिन किसान आंदोलन जैसी घटनाओं से उनके मन में कुछ सवाल जरूर हैं। राहुल की टिप्पणी शायद इन्हीं मुद्दों की तरफ इशारा कर रही थी। लेकिन क्या ये सही तरीका था? ये सोचने की बात है।

अमेरिका में राहुल की स्पीच: सिखों की आजादी पर उठे सवाल

राहुल गांधी की वो स्पीच क्या थी? आइए, विस्तार से देखें। 9 सितंबर 2024 को अमेरिका में भारतीय प्रवासियों से बातचीत में राहुल ने आरएसएस पर हमला किया। उन्होंने कहा कि आरएसएस कुछ धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों को नीचा मानती है। फिर एक सिख व्यक्ति से नाम पूछकर बोले, "लड़ाई ये है कि क्या एक सिख भारत में पगड़ी पहन सकेगा या कड़ा पहन सकेगा। या क्या वो गुरुद्वारे जा सकेगा। ये लड़ाई सिर्फ उसके लिए नहीं, सभी धर्मों के लिए है।" ये शब्द सीधे थे, लेकिन संदर्भ आरएसएस की विचारधारा का था। राहुल का कहना था कि भारत की लड़ाई राजनीति से बड़ी है। ये एकता और विविधता की लड़ाई है। लेकिन भारत में ये बातें तूल पकड़ गईं। भाजपा मंत्री हरदीप सिंह पुरी, जो खुद सिख हैं, ने कहा कि उन्होंने 60 साल से पगड़ी पहनी है, कभी समस्या नहीं हुई। उन्होंने 1984 के दंगों का जिक्र किया, जब कांग्रेस सत्ता में थी। 3000 सिख मारे गए थे। पुरी ने कहा कि सिखों को असुरक्षा तब महसूस हुई, जब राहुल की फैमिली सत्ता में थी।

राहुल ने 21 सितंबर 2024 को जवाब दिया। उन्होंने ट्वीट किया कि भाजपा झूठ फैला रही है। वो चुप नहीं होंगे। उन्होंने सिख भाइयों से पूछा कि क्या उनकी बात में कुछ गलत है? क्या भारत ऐसा देश नहीं होना चाहिए जहां हर सिख बिना डर के अपनी आस्था माने? कुछ सिख संगठनों ने राहुल के बयान की निंदा की, लेकिन खालिस्तानी नेता गुरपतवंत सिंह पन्नून ने समर्थन किया। ये दिखाता है कि मुद्दा कितना जटिल है। एक तरफ मुख्यधारा के सिख नेता नाराज, दूसरी तरफ अलगाववादी समर्थन। कांग्रेस ने राहुल का बचाव किया। उन्होंने कहा कि राहुल ने सच्चाई बोली है। भाजपा धार्मिक उन्माद फैला रही है। हिजाब पर अभियान चलाने वाले कल पगड़ी पर आ सकते हैं। ये बहस धार्मिक आजादी पर केंद्रित हो गई। क्या भारत में अल्पसंख्यक सुरक्षित महसूस करते हैं? ये सवाल महत्वपूर्ण है। राहुल की स्पीच ने इसे फिर से उठाया। लेकिन विदेश में कहना सही था या नहीं, ये बहस का विषय है। कुछ कहते हैं कि विपक्ष के नेता को देश की छवि का ख्याल रखना चाहिए। दूसरे कहते हैं कि सच्चाई कहीं भी बोली जा सकती है। ये मामला हमें सोचने पर मजबूर करता है कि अभिव्यक्ति की सीमा क्या है।

टिप्पणी पर हंगामा: भाजपा का हमला और राहुल का जवाब

राहुल की टिप्पणी के बाद भारत में क्या हुआ? दिल्ली में सिखों ने राहुल के घर के बाहर प्रदर्शन किया। उन्होंने नारे लगाए कि राहुल झूठ बोल रहे हैं। भाजपा ने इसे मौका बनाया। केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने राहुल को 'नंबर 1 आतंकवादी' कहा। इस पर एफआईआर हुई। भाजपा ने कहा कि राहुल विदेश में देश को बदनाम कर रहे हैं। वो सिखों में डर फैला रहे हैं। लेकिन सच्चाई ये है कि सिख भारत में सम्मानित हैं। सेना में उच्च पदों पर हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने सिखों के लिए कई काम किए, जैसे करतारपुर कॉरिडोर। भाजपा ने राहुल की आरक्षण वाली बात पर भी हमला किया, लेकिन वो अलग मुद्दा है। सिख समुदाय विभाजित दिखा। कुछ ने राहुल की निंदा की, कुछ ने कहा कि वो किसान आंदोलन की बात कर रहे थे। 2020-21 के किसान आंदोलन में सिख किसान ज्यादा थे। सरकार के कानूनों पर विरोध हुआ। कई सिखों को 'खालिस्तानी' कहा गया, जो उन्हें चुभा। शायद राहुल उसी की तरफ इशारा कर रहे थे।

राहुल ने जवाब में कहा कि भाजपा उन्हें चुप कराना चाहती है। वो एकता, समानता और प्यार की बात करते रहेंगे। कांग्रेस ने कहा कि भाजपा का 'मोदी बबल' फूट गया है। वो नफरत की राजनीति कर रही है। ये विवाद दिखाता है कि भारत की राजनीति कितनी polarized है। एक बयान से इतना हंगामा। लेकिन ये हमें सोचने देता है कि धार्मिक मुद्दों पर बहस कैसे होनी चाहिए। क्या नेता ऐसे सवाल उठा सकते हैं? या क्या ये समाज को बांटता है? दोनों पक्षों में सच्चाई है। भाजपा कहती है कि भारत में सिख सुरक्षित हैं। राहुल कहते हैं कि डर का माहौल है। आंकड़े देखें तो सिखों पर हमले कम हैं, लेकिन कुछ घटनाएं हुई हैं। जैसे विदेश में सिख नेताओं पर हमले। भारत में भी कुछ विवाद। ये मुद्दा संवेदनशील है। हमें संतुलित नजरिया रखना चाहिए।

कोर्ट में पहुंचा मामला: इलाहाबाद हाईकोर्ट में क्या हुआ?

अब कानूनी पक्ष। राहुल की टिप्पणी पर वाराणसी में नागेश्वर मिश्रा ने शिकायत की। उन्होंने कहा कि ये बयान भड़काऊ है, सांप्रदायिक सद्भाव बिगाड़ता है। एफआईआर की मांग की गई। धाराएं: देशद्रोह और शत्रुता को बढ़ावा देने जैसी। नवंबर 28, 2024 को मजिस्ट्रेट कोर्ट ने खारिज कर दिया। कहा कि विदेश में अपराध के लिए केंद्र की मंजूरी चाहिए, section 208 BNSS के तहत। लेकिन जुलाई 2025 में सेशंस कोर्ट ने वो आदेश रद्द किया। कहा कि मजिस्ट्रेट ने गलती की, नए सिरे से सुनवाई हो। राहुल ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दी।

3 सितंबर 2025 को सुनवाई हुई। जस्टिस समीर जैन की बेंच। राहुल के वकील गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि राहुल ने सिखों को विद्रोह के लिए नहीं उकसाया। इरादा गलत नहीं था। पूरे भाषण का संदर्भ देखना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट के अनुसार, अलग-अलग वाक्यों से मंसूबा नहीं निकाला जा सकता। उन्होंने कहा कि 25 शब्दों से फैसला नहीं हो सकता। यूपी सरकार के वकील मनीष गोयल ने विरोध किया। कहा कि राहुल विपक्ष के नेता हैं, उनकी बात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाती है। उन्होंने बयान को माना है, जो अपराध है। मजिस्ट्रेट को देखना चाहिए कि संज्ञेय अपराध बनता है या नहीं। अगर हां, तो एफआईआर हो। सरकार ने कहा कि राहुल ने विपक्ष के विचार विदेश में पेश किए, जो देश के खिलाफ है।

कोर्ट ने दोनों पक्ष सुने। कोई टिप्पणी नहीं की, लेकिन मजिस्ट्रेट को कहा कि फैसला आने तक कार्यवाही न करें। ये दिखाता है कि कोर्ट सतर्क है। मामला गंभीर है। क्या बयान अपराध है? या अभिव्यक्ति की आजादी? ये फैसला तय करेगा। कानूनी विशेषज्ञ कहते हैं कि विदेश में दिए बयान पर भारत में केस मुश्किल है। लेकिन अगर प्रभाव भारत पर पड़ता है, तो संभव। ये मामला हमें कानून की बारीकियां सिखाता है।

फैसला अभी बाकी: क्या होगा आगे?

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 3 सितंबर 2025 को फैसला सुरक्षित रखा। 6 सितंबर 2025 तक कोई फैसला नहीं आया। मजिस्ट्रेट कोर्ट में कार्यवाही रुकी है। अगर हाईकोर्ट राहुल के पक्ष में फैसला देता है, तो मामला खत्म। अगर नहीं, तो मजिस्ट्रेट नए सिरे से सुनेगा। एफआईआर हो सकती है। ये राजनीतिक असर डालेगा। राहुल की छवि पर। लेकिन ये धार्मिक आजादी पर बहस जारी रखेगा। क्या भारत में अल्पसंख्यक सुरक्षित हैं? क्या राजनीतिक बयान सीमित होने चाहिए? ये सवाल बने रहेंगे। समाज को एकजुट रहना चाहिए। विविधता हमारी ताकत है। ऐसे मामलों से सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए। राहुल की टिप्पणी ने एक जरूरी बहस शुरू की, लेकिन तरीका विवादास्पद रहा। आखिर में, कोर्ट का फैसला इंतजार है। ये हमें याद दिलाता है कि लोकतंत्र में बोलने की आजादी महत्वपूर्ण है, लेकिन जिम्मेदारी भी।

ट्रंप का डैमेज कंट्रोल, पीएम मोदी का दोस्ताना अंदाज

किस दिशा में जा रहा भारत-अमेरिका रिश्ता?

भारत और अमेरिका के रिश्ते हमेशा से ही दुनिया की नजरों में रहे हैं। दोनों देश बड़े लोकतंत्र हैं और कई मुद्दों पर साथ काम करते हैं। लेकिन हाल के दिनों में कुछ तनाव देखने को मिला है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर ऊंचे टैरिफ लगाए हैं। उन्होंने भारत को चीन की तरफ खोने की बात कही। फिर डैमेज कंट्रोल करते हुए दोस्ती की बात की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सकारात्मक जवाब दिया। यह सब क्या दर्शाता है? रिश्ता किस तरफ जा रहा है?

तनाव की जड़ें: टैरिफ और तेल का खेल

भारत-अमेरिका रिश्ते में हाल का तनाव मुख्य रूप से व्यापार से जुड़ा है। ट्रंप प्रशासन ने भारत के सामान पर 50 प्रतिशत तक टैरिफ लगा दिया। यह फैसला भारत के लिए बड़ा झटका है। ट्रंप ने कहा कि भारत अमेरिका के साथ व्यापार में फायदा उठा रहा है। उन्होंने भारत को "एक तरफा आपदा" कहा। भारत रूस से तेल खरीद रहा है, जो ट्रंप को पसंद नहीं। रूस पर अमेरिका ने प्रतिबंध लगाए हैं, लेकिन भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए रूस से तेल लेता रहा। ट्रंप ने कहा कि इससे अमेरिका भारत को चीन की तरफ खो रहा है। यह बातें अगस्त के अंत में शुरू हुईं। सितंबर में तनाव और बढ़ा। भारत ने इसका विरोध किया। भारतीय अधिकारियों ने कहा कि यह रिश्ते को नुकसान पहुंचा रहा है। मोदी सरकार ने अमेरिका से बातचीत की कोशिश की, लेकिन ट्रंप ने टैरिफ बढ़ा दिए।

यह तनाव नया नहीं है। ट्रंप की पहली सरकार में भी व्यापार पर झगड़े हुए थे। लेकिन अब दूसरी सरकार में यह ज्यादा गंभीर है। भारत अमेरिका को कपड़े, जूते और दवाएं निर्यात करता है। इन पर टैरिफ से भारतीय कंपनियों को नुकसान हो रहा है। दूसरी तरफ, भारत ने भी अमेरिका के कुछ सामान पर टैरिफ बढ़ाए। जैसे स्टील और एल्यूमिनियम पर। लेकिन अमेरिका का कदम ज्यादा बड़ा है। विशेषज्ञ कहते हैं कि इससे वैश्विक व्यापार प्रभावित होगा। भारत अब चीन और रूस की तरफ ज्यादा झुक रहा है। हाल में मोदी चीन गए और वहां व्यापार बढ़ाने की बात की। रूस से तेल खरीदना जारी है। यह अमेरिका के लिए चिंता की बात है। क्योंकि अमेरिका चीन को अपना दुश्मन मानता है। भारत क्वाड ग्रुप में अमेरिका के साथ है, जो चीन के खिलाफ है। लेकिन अब रिश्ता डगमगा रहा है।

कुछ लोग कहते हैं कि ट्रंप की नीति से भारत मजबूत हो रहा है। वह आत्मनिर्भर बन रहा है। लेकिन कई विशेषज्ञ चेताते हैं कि लंबे समय में नुकसान होगा। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापार साथी है। 2024 में दोनों के बीच व्यापार 200 बिलियन डॉलर से ज्यादा था। अब यह घट सकता है। आईटी सेक्टर भी प्रभावित हो सकता है। ट्रंप के सलाहकार ने कहा कि अमेरिका कॉल सेंटर भारत से वापस लाएगा। यह भारतीय युवाओं के लिए बुरी खबर है। लाखों नौकरियां दांव पर हैं। कुल मिलाकर, तनाव की जड़ें गहरी हैं। व्यापार, ऊर्जा और भूराजनीति सब जुड़े हैं। दोनों देशों को संतुलन बनाना होगा। नहीं तो रिश्ता कमजोर हो सकता है।

आगे की राह: उम्मीदें और सावधानियां

आगे क्या होगा? यह बड़ा सवाल है। ट्रंप और मोदी की दोस्ती से शुरुआत अच्छी है। लेकिन असली काम टैरिफ हटाना है। भारत अमेरिका से बातचीत चाहता है। ट्रंप ने कहा कि सौदा हो सकता है। लेकिन शर्तें क्या होंगी? भारत रूस से तेल कम करे? यह मुश्किल है। क्योंकि तेल सस्ता है और जरूरत है। भारत अपनी नीति नहीं बदलेगा। वह बहुपक्षीय है। चीन से बात कर रहा है, लेकिन अमेरिका से भी। मोदी की यात्राएं यह दिखाती हैं। उम्मीद है कि रिश्ता मजबूत होगा। २०२५ में कई मीटिंग्स हैं। जी२०, यूएन में। वहां मुद्दे सुलझ सकते हैं। अमेरिका में पूर्व अधिकारी कहते हैं कि भारत महत्वपूर्ण है। ट्रंप को याद रखना चाहिए। सावधानी यह है कि ट्रंप की नीति अप्रत्याशित है। अगर चुनाव या अन्य मुद्दे आए, तो बदलाव हो सकता है। भारत को तैयार रहना चाहिए। आत्मनिर्भर बनना। अन्य देशों से रिश्ते बढ़ाना। लेकिन अमेरिका को अलग न करें। क्योंकि दोनों लोकतंत्र हैं। साझा मूल्य हैं।

ट्रंप का डैमेज कंट्रोल: दोस्ती की नई शुरुआत?

ट्रंप ने पहले भारत की आलोचना की। उन्होंने कहा कि अमेरिका भारत को खो रहा है। लेकिन जल्दी ही उन्होंने बात पलट दी। सितंबर 5 को ट्रंप ने कहा कि भारत-अमेरिका रिश्ता "बहुत खास" है। उन्होंने मोदी को अपना दोस्त बताया। कहा कि हम हमेशा दोस्त रहेंगे। यह डैमेज कंट्रोल था। क्योंकि उनकी बातों से भारत नाराज हो गया था। ट्रंप ने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं। कभी-कभी मतभेद होते हैं। लेकिन रिश्ता मजबूत है। उन्होंने मोदी को "महान प्रधानमंत्री" कहा। यह व्यक्तिगत दोस्ती पर जोर था। ट्रंप जानते हैं कि मोदी के साथ उनकी केमिस्ट्री अच्छी है। 2019 में "हाउडी मोदी" इवेंट याद है? वहां लाखों लोग आए थे।

ट्रंप की टीम भी रिश्ता सुधारने में लगी है। उन्होंने व्यापार सौदे की बात की। कहा कि जल्दी कोई समझौता हो सकता है। लेकिन ट्रंप ने रूस से तेल खरीदने पर नाराजगी भी जताई। उन्होंने कहा कि भारत को अमेरिका से तेल लेना चाहिए। यह डैमेज कंट्रोल का हिस्सा है। ट्रंप की नीति है कि पहले दबाव डालो, फिर बात करो। वह चीन के साथ भी ऐसा करते हैं। भारत के साथ भी यही हो रहा है। कुछ अमेरिकी अधिकारी कहते हैं कि ट्रंप की बातें अतिरंजित हैं। लेकिन भारत महत्वपूर्ण है। इंडो-पैसिफिक में चीन के खिलाफ भारत की जरूरत है। इसलिए डैमेज कंट्रोल जरूरी था।

यह कदम काम कर रहा है। भारत ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। लेकिन सवाल है कि क्या यह लंबा चलेगा? ट्रंप की नीति अक्सर बदलती है। अगर टैरिफ नहीं हटे, तो तनाव रहेगा। विशेषज्ञ कहते हैं कि ट्रंप को भारत की अहमियत समझनी चाहिए। भारत दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था है। अमेरिका को उसका साथ चाहिए। डैमेज कंट्रोल अच्छा है, लेकिन असली टेस्ट आगे है। क्या व्यापार सौदा होगा? क्या रक्षा सहयोग बढ़ेगा? ये देखना होगा। ट्रंप की यह कोशिश रिश्ते को नई दिशा दे सकती है। लेकिन सब कुछ व्यक्तिगत दोस्ती पर टिका है।

मोदी का दोस्ताना अंदाज: सकारात्मक जवाब की रणनीति

प्रधानमंत्री मोदी हमेशा दोस्ताना रहते हैं। ट्रंप की बातों पर उन्होंने नाराजगी नहीं दिखाई। बल्कि सितंबर 6 को मोदी ने कहा कि वह ट्रंप के भावनाओं का पूरा समर्थन करते हैं। भारत-अमेरिका रिश्ता बहुत सकारात्मक है। मोदी ने कहा कि हमारा साझेदारी वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण है। उन्होंने ट्रंप को दोस्त कहा। यह मोदी का स्टाइल है। वह व्यक्तिगत रिश्तों से बड़े मुद्दे सुलझाते हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी कहा कि मोदी अमेरिका के साथ रिश्ते को बहुत महत्व देते हैं। दोनों देश मिलकर काम कर रहे हैं।

मोदी की यह रणनीति समझदारी वाली है। भारत को अमेरिका की जरूरत है। तकनीक, रक्षा और निवेश में। मोदी ने चीन और रूस से बात की, लेकिन अमेरिका को अलग नहीं किया। वह संतुलन बनाते हैं। हाल में मोदी ने क्वाड मीटिंग की तैयारी की। यह चीन के खिलाफ है। अमेरिका के साथ रक्षा सौदे बढ़े हैं। जैसे ड्रोन और हथियार। लेकिन व्यापार पर मोदी ने सख्त रुख रखा। उन्होंने कहा कि भारत अपने हितों की रक्षा करेगा। रूस से तेल सस्ता है, जो भारत की अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। मोदी का दोस्ताना अंदाज तनाव कम करता है। लेकिन वह कमजोर नहीं दिखते।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

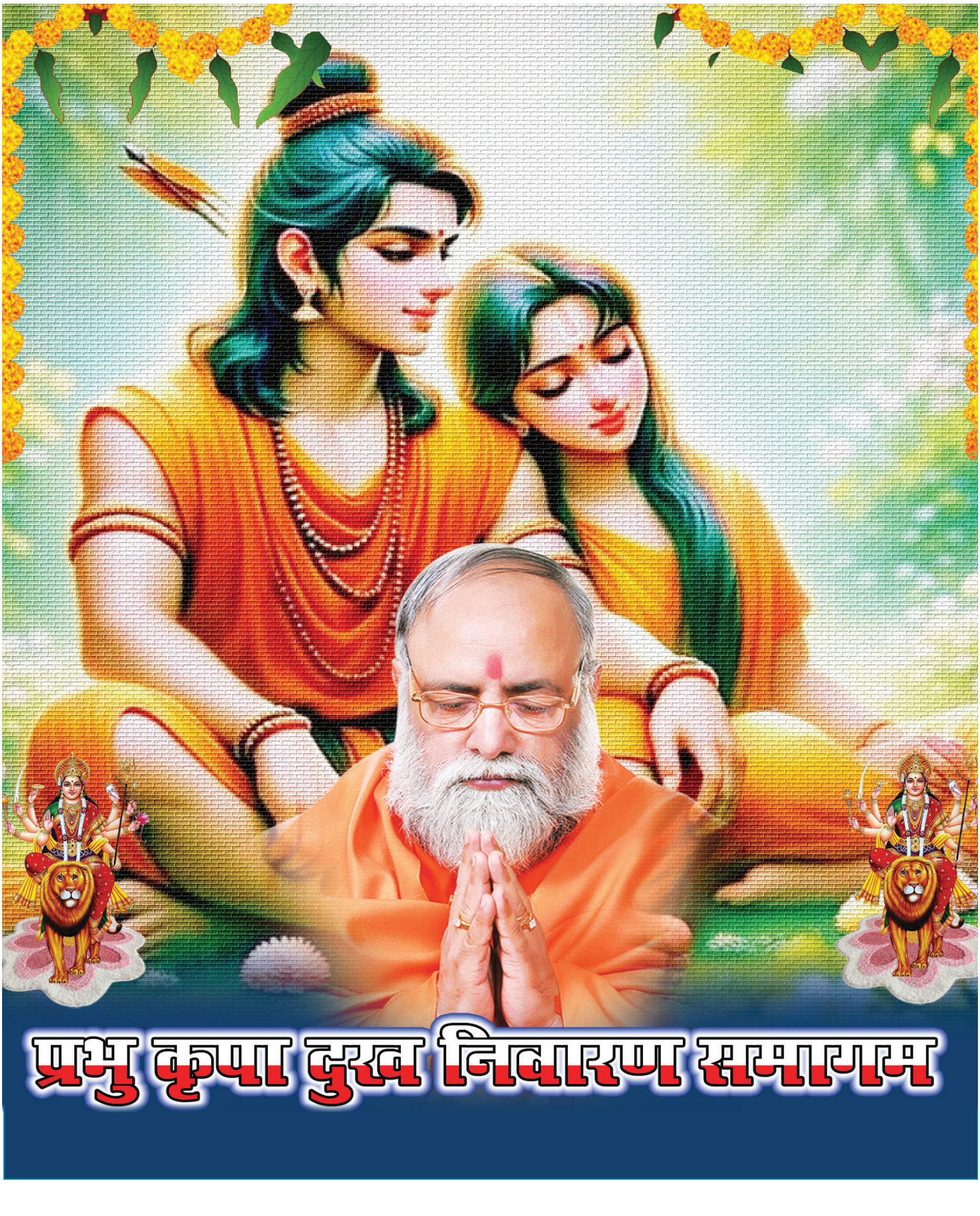

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries